वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक
जुलाई 01-15, 2025

हिन्दू विश्व

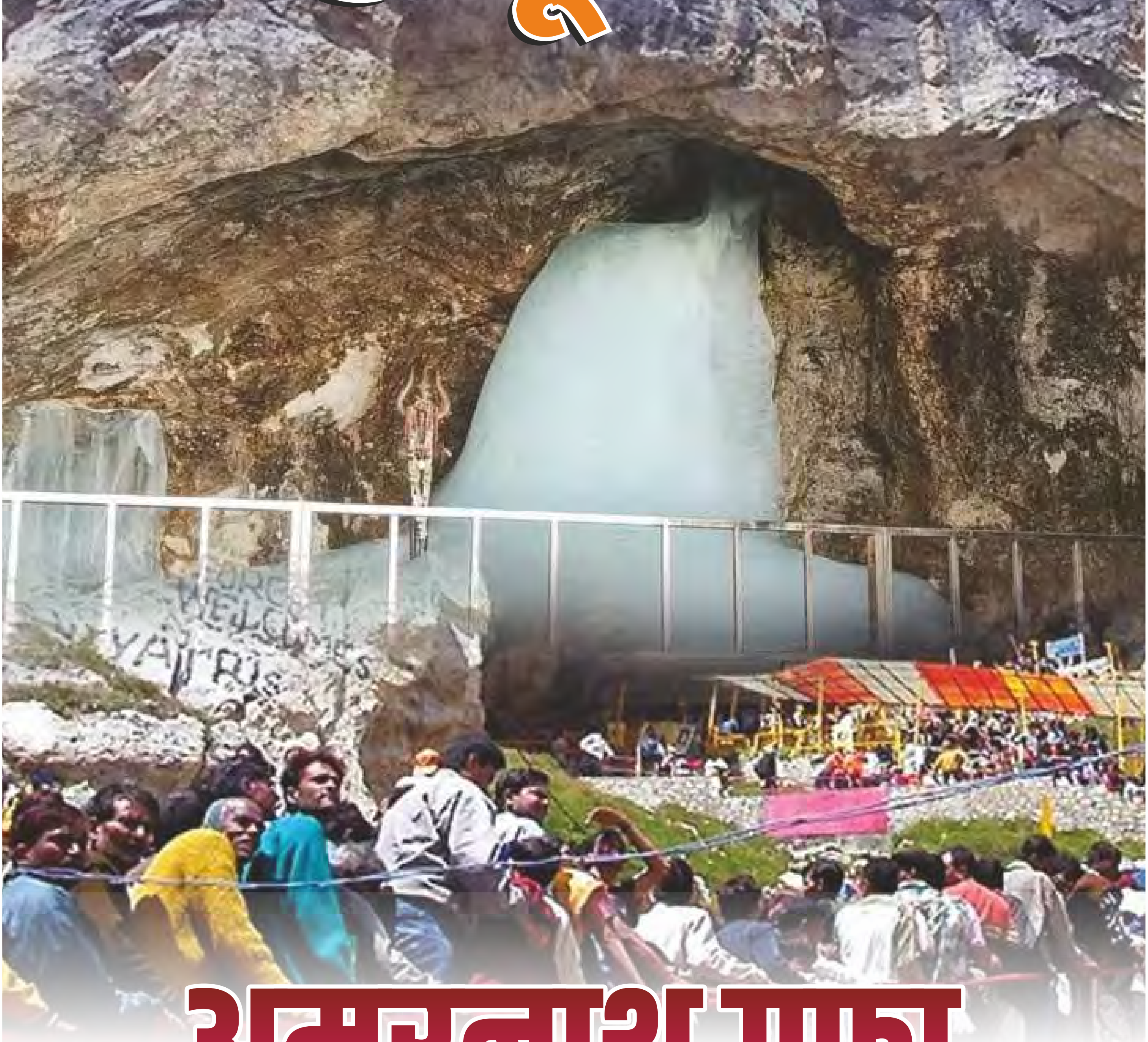

अमरनाथ गुफा

सनातन श्रद्धा और साधना का अलौकिक केन्द्र

@eHinduVishwa
/HinduVishwa

जयपुर प्रांत के दुर्गावाहिनी शौर्य प्रशिक्षण वर्ग को संबोधित करते विहिप महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा जी

झाँसी (उ.प्र.) में मंदिर को सरकारी नियंत्रण से मुक्ति एवं हिन्दू जनसँख्या असंतुलन पर प्रेसवार्ता को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद परांडे जी

मुरादाबाद में मेरठ क्षेत्र के परिषद शिक्षा वर्ग को संबोधित करते विहिप अध्यक्ष मा. आलोक कुमार जी तथा वर्ग में उपस्थित कार्यकर्ता

सीकर राजस्थान में जयपुर प्रांत के परिषद शिक्षा वर्ग के समापन के अवसर पर उपस्थित विहिप महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा जी, प्रांत के पदाधिकारी व कार्यकर्ता

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

जो अग्नि पाँचों वर्णों– सम्पूर्ण समाज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा निषाद) को मन्त्रद्रष्टा ऋषियों के सदृश निर्मल करने वाला पुरोहित (लोकहित को सामने रखने वाला) है। उन महान, स्तुत्य अग्निदेव की हम स्तुति करते हैं। आप उपयाम पात्र में प्रतिष्ठित हों। यही आपका आवास केन्द्र है। तेजस्वी अग्निदेव परमात्मा की प्रसन्नता के लिए आपको यहाँ प्रतिष्ठित करते हैं।

– यजुर्वेद

01–15 जुलाई, 2025

आषाढ़ शुक्ल – श्रावण कृष्ण पक्ष

पिंगल संवत्सर

वि. सं. – 2082, युगाब्द– 5127

सम्पादक

विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक

मुरारी शरण शुक्ल

मो. – 7217685539

परामर्शदाता

सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
विजय कुमार,
रवि पराशर

व्यवस्थापक

श्री दूधनाथ शुक्ल

मो. – 09582555152

सज्जा

श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :

'हिन्दू विश्व'

संकटमोचन आश्रम, प्रभाग – 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली–110022–05
दूरभाष : 09582555152

011–26178992, 011–26103495
hinduvishwa@gmail.com

– : मूल्य :–

विदेशों के लिए	$ 75 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित	
एक प्रति	15/–
वार्षिक	300/–
त्रिवर्षीय	750/–
पंचवर्षीय	1,200/–
दसवर्षीय	2,250/–
पन्द्रह वर्षीय	3,100/–

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज – 28

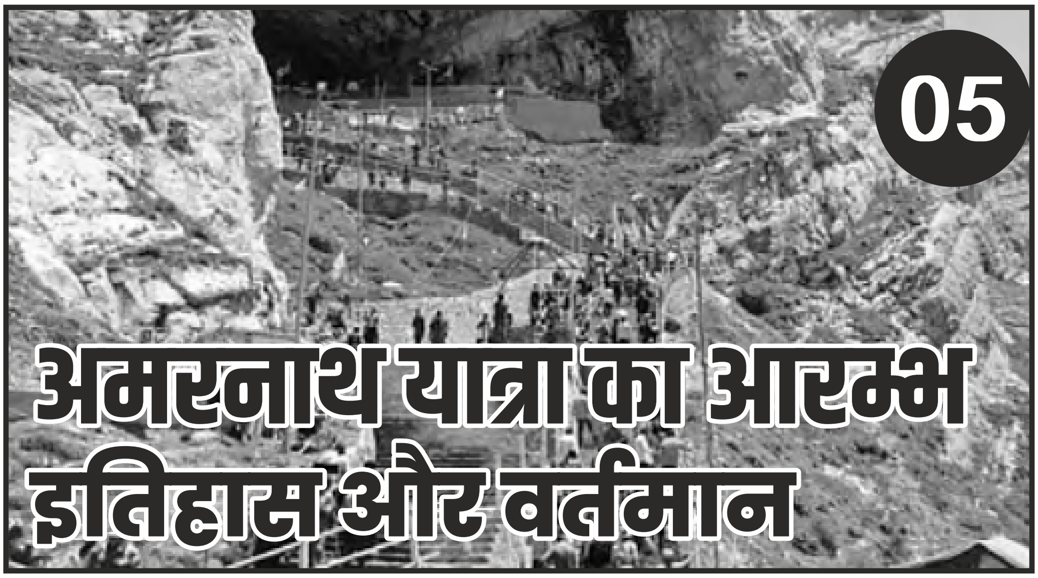

बाबा अमरनाथ की यात्रा और भारत की वैज्ञानिक परंपराएँ	08
शस्त्रागार जिहाद राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए घातक, शासन संज्ञान ले	10
अमरनाथ यात्रा के संस्मरण	11
शिव जी की अमरकथा का स्थल है अमरनाथ	12
बाबा अमरनाथ यात्रा का प्रचीन इतिहास	14
बढ़ता प्लास्टिक प्रदूषण दुनियाँ की जटिल पर्यावरण समस्या	15
क्या 'आत्मनिर्भर भारत' पश्चिमी दुनियाँ और चीन के लिए खतरा है?	17
वनवासी समाज के धर्मांतरण का कुचक्र	20
अम्लपित्त कारण और निवारण	23
आचार्य सुशील कुमार जी महाराज जन्म शताब्दी महोत्सव	24
हिंदू अस्मिता की पुकार	25
हिन्दू युवा बनाएंगे भारत को विश्व गुरु : चम्पत राय जी	26

सुभाषित

मधुदोहं दुहेद् राष्ट्रं भ्रमरा इव पादपम्।
वत्सापेक्षो दुहेच्चैव स्तनांश्च न विकुट्टयेत्।।

अर्थात् जैसे भ्रमर धीरे–धीरे पुष्प एवम वृक्ष का रस लेता है, जैसे मनुष्य बछड़े को कष्ट न देकर धीरे–धीरे गाय को दुहता है, उसी प्रकार राजा को कोमलता के साथ सत्–तृप्ति हेतु राष्ट्ररूपी गौ का दोहन करना चाहिए।

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

अमरनाथ गुफा

सनातन श्रद्धा और साधना का अलौकिक केन्द्र

भारत के उत्तर में बर्फ़ीले पर्वतों से आच्छादित कश्मीर घाटी की एक दुर्गम चोटी पर स्थित है अमरनाथ गुफा—एक ऐसा स्थल जो केवल तीर्थ नहीं, सनातन संस्कृति की आध्यात्मिक ऊँचाइयों का साक्षात प्रतीक है। यह गुफा हिमालय की कोर में छिपा हुआ एक दिव्य आलोक है, जहाँ पहुँचने वाला प्रत्येक साधक केवल देह से ही नहीं, आत्मा से भी तपकर शुद्ध होता है। अमरनाथ गुफा का महत्त्व केवल वहाँ प्रकट होने वाले हिमलिंग तक सीमित नहीं है; यह गुफा स्वयं में एक अध्यात्म—पीठ है, जहाँ सहस्रों वर्षों से साधु—संन्यासियों ने तप किया, ऋषियों ने ध्यान साधा और जनसामान्य ने श्रद्धा से सच्चे अर्थों में 'अमरत्व' की भावना को जिया।

प्राकृतिक रूप से 3,888 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह गुफा वर्ष के अधिकांश समय बर्फ से ढकी रहती है। किंतु जब आषाढ़—श्रावण की कालावधि में यह मार्ग कुछ समय के लिए खुलता है, तो मानो हिमालय का द्वार स्वयं श्रद्धालुओं के लिए खुल जाता है। यहाँ की यात्रा — अमरनाथ यात्रा — केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सहिष्णुता, आत्मशुद्धि, साहस और विश्वास की संयुक्त परीक्षा है।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखें, तो यह गुफा अतीत के अरण्य संस्कार की याद दिलाती है, जहाँ एकांत में साधना की परंपरा जीवित रही है। नीलकंठ पर्वत श्रृंखला की गोद में यह गुफा ऋषियों की मौन साधना और प्रकृति के विराट तप का गवाह रही है। यहाँ की चट्टानों, दीवारों और अंधकार में एक सूक्ष्म आध्यात्मिक ऊर्जा विद्यमान है, जो हर आगंतुक को भीतर तक झकझोर देती है।

गुफा का प्राकृतिक स्थापत्य भी रहस्य और विस्मय से भरपूर है। इसका एकांत, शांति और ऊँचाई स्वयं में एक ऐसा वातावरण रचते हैं, जहाँ लौकिक चित्त ठहरता है और आत्मा उद्भाषित होती है। यह गुफा केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, एक चेतन स्थल है, जहाँ आत्मा और परमात्मा के मध्य की दूरी मानो मिट जाती है। सदियों से साधारण जन, राजा—महाराजा, योगी और तीर्थयात्री इस गुफा तक पहुँचे हैं। जनश्रुतियों के अनुसार, दक्षिण भारत के महान शैव संत आदिशंकराचार्य भी यहाँ आए थे। इसका उल्लेख कई पुराणों, कश्मीरी लोककथाओं और यात्रावृत्तांतों में मिलता है, जो इस स्थान के प्राचीन महत्व को रेखांकित करते हैं।

अमरनाथ गुफा अपने में विज्ञान, तकनीक और भौतिकता से कहीं परे भी एक संसार है — जहाँ आत्मा नतमस्तक होती है और चेतना विस्तार पाती है। यह गुफा हमें स्मरण कराती है कि भारत का हृदय अध्यात्म है। इसलिए, अमरनाथ गुफा की सुरक्षा, इसके परिवेश का संरक्षण और इसकी आध्यात्मिक गरिमा की रक्षा, हम सबका सांस्कृतिक दायित्व है। यह गुफा न तो केवल कश्मीर की धरोहर है और न ही केवल हिंदुओं की आस्था का केन्द्र, यह संपूर्ण भारत की आत्मा का उत्तुंग शिखर है।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखें, तो यह गुफा अतीत के अरण्य संस्कार की याद दिलाती है, जहाँ एकांत में साधना की परंपरा जीवित रही है। नीलकंठ पर्वत श्रृंखला की गोद में यह गुफा ऋषियों की मौन साधना और प्रकृति के विराट तप का गवाह रही है। यहाँ की चट्टानों, दीवारों और अंधकार में एक सूक्ष्म आध्यात्मिक ऊर्जा विद्यमान है, जो हर आगंतुक को भीतर तक झकझोर देती है।

अमरनाथ यात्रा का आरम्भ इतिहास और वर्तमान

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

अमरनाथ गुफा जम्मू–कश्मीर के हिमालय पर्वत श्रृंखला में श्रीनगर से 135 किलोमीटर दूर पूर्व–उत्तर दिशा में अनंतनाग जिले में पहलगाम के निकट समुद्रतल से लगभग 3888 मीटर (13600 फिट) की ऊँचाई पर स्थित है। यह गुफा उत्तरमुखी है।

गुफा का आकार

इस गुफा की लम्बाई (भीतर की ओर गहराई) 19 मीटर है, इसकी चौड़ाई 16 मीटर है और अंदर से गुफा की ऊँचाई 11 मीटर है। गुफा की परिधि लगभग 50 फुट है। गुफा के ऊपर से बर्फ के पानी की बूंदे टपकती रहती है।

यात्रा के मार्ग

बर्फानी बाबा के नाम से प्रसिद्ध बाबा अमरनाथ की गुफा तक जाने के दो मार्ग हैं।

1. पहलगाम होकर यह मार्ग कुछ आसान है, किन्तु यह मार्ग थोड़ा लम्बा है– लगभग 46 किलोमीटर। जम्मू से पहलगाम की दूरी 315 किलोमीटर है।
2. सोनमर्ग के समीप बालटाल से होकर। बालटाल से गुफा की दूरी 14 किलोमीटर है, लेकिन पहाड़ों पर एकदम खड़ी चढ़ाई वाला मार्ग है यह। जम्मू से बालटाल की दूरी 400 किलोमीटर है।

बीआरओ ने बनाई बालटाल से अमरनाथ तक सड़क

अमरनाथ यात्रा पर विगत कालखंड में अनेक आतंकी हमले हुए हैं, आतंकी हमलों के कारण यह यात्रा अनेक वर्षों तक प्रभावित भी रही है। बजरंग दल के पुरुषार्थ से यात्रा पुनः आरम्भ हो पायी। यात्रा का मार्ग दुर्गम व कठिन होने के कारण अनेक यात्री खच्चरों से यात्रा करते थे। खच्चर लेकर यात्री ढोने वाले सभी मुसलमान थे, यात्रा के साधनों पर एकाधिकार होने से, ये लोग आये दिन अपनी जिहादी मानसिकता से उपद्रव करते रहते थे, यात्री जिहाद का शिकार होते थे, यात्रियों के लिए सेवा कार्य करने वालों और भंडारा चलाने वालों पर भी हमले होते थे, यात्रियों पर खतरे की आशंका हमेशा रहती थी। अब सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) ने बालटाल मार्ग की ओर से अमरनाथ गुफा तक वाहनों की आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए सड़क चौड़ीकरण का कार्य पूर्ण कर लिया है और 6 नवम्बर 2023, सोमवार को वाहनों का पहला जत्था गुफा तक सफलतापूर्वक पहुँचा दिया था। सीमा सड़क संगठन की यह उपलब्धि अत्यंत उल्लेखनीय है। अब यात्री सहजता से बाबा की गुफा तक यात्रा कर सकेंगे, दर्शन–साधना कर पायेंगे। मार्ग चौड़ा हो जाने से यात्रा सुगम हो गया है। अब यात्रा पर जिहादियों का प्रभाव न्यूनतम होगा।

यात्राकाल तक पुरा यात्रा मार्ग नो फ्लाई जोन

केन्द्रीय गृह मंत्रालय के सुरक्षा सम्बन्धित सुझावों के आलोक में जम्मू–कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिंहा के आदेश पर राज्य के गृह मंत्रालय ने घोषणा जारी करते हुए कहा है कि अमरनाथ यात्रा का पुरा यात्रा मार्ग 1 जुलाई से 10 अगस्त 2025 तक नो फ्लाई जोन होगा। इस क्षेत्र में मानव रहित हवाई यान, ड्रोन, गुब्बारे समेत किसी भी प्रकार का

विमानन यंत्र उड़ाना प्रतिबंधित है। यह प्रतिबंध रोगियों को ले जाने वाले विमान, आपदा प्रबंधन और सुरक्षाबलों द्वारा निगरानी उड़ानों पर लागू नहीं होगा। आदेश में कहा गया है, "श्री अमरनाथ जी यात्रा 2025 के दौरान मजबूत सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से यात्रा के सभी मार्गों को नो फ्लाइंग जोन घोषित किया जाता है, जिसमें पहलगाम और बालटाल दोनों मार्ग शामिल हैं।"

ऑपरेशन शिव

यह बहु एजेंसी सुरक्षा अभियान है, जिसमें विभिन्न सुरक्षाबलों के 70,000 जवान और एआई से सुरक्षा सुनिश्चित की जाएगी। इसमें एफआरएस, रेडियो और सेटेलाइट नेटवर्क, आरफिड, एनडीआएफ, एसडीआरएफ, अर्द्धसैनिक बल, सेना एवं क्यूआरटी की तैनाती की गई है। सभी व्यवस्थाओं को मिलाकर चलाये जा रहे इस सुरक्षा प्रबन्ध का नामकरण ऑपरेशन शिव के रूप में किया गया है।

एआई कैमरे से एफआरएस व्यवस्था

पहली बार एआई युक्त कैमरों के माध्यम से फेशियल रिकागनिशन सिस्टम (FRS) की सहायता से जम्मू–कश्मीर में बाबा अमरनाथ के यात्रियों की सुरक्षा की जाएगी। यह प्रणाली विशेषरूप से पहलगाम और बालटाल मार्गों पर और जम्मू से कश्मीर तक हर शिविर और मार्गों पर स्थापित की गई है। इस यात्रा की सुरक्षा और सुचारू संचालन अपने आप में एक बड़ी चुनौती है। केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने स्वयं दो समीक्षा बैठकें की हैं और सुरक्षा एवं अन्य सुविधाओं पर चर्चा करके निर्णयों को अंतिम रूप दिया गया है।

एफआरएस से होगी संदिग्धों की पहचान

FRS चेहरे की पहचान तकनीक से लैस उन्नत निगरानी कैमरों का उपयोग करता है, ताकि ज्ञात संदिग्धों के डेटाबेस के साथ चेहरों को स्कैन और मिलान किया जा सके। सिस्टम सक्रिय आतंकवादियों और सुरक्षा निगरानी सूची में शामिल अन्य व्यक्तियों की छवियों के साथ एकीकृत है, जिससे मिलान का पता चलने पर सुरक्षाबलों को तत्काल अलर्ट मिल जाता है। यह वास्तविक समय की पहचान क्षमता तीर्थयात्रा के दौरान संभावित खतरों पर तेजी से प्रतिक्रिया करने की क्षमता को बढ़ाती है। FRS की शुरूआत आतंकवादी खतरों का मुकाबला करने के लिए प्रौद्योगिकी–संचालित पुलिसिंग की ओर बदलाव को दर्शाती है। 'फेस रिकॉग्निशन सिस्टम कैमरा से संदिग्धों की पहचान होती है, सब कुछ इसमें रिकॉर्ड रहता है, फेस रिकॉर्ड रहता है। पहले जो कैमरा लगाते थे, उसमें पता नहीं चलता था, इसमें पहचान ज्यादा है, सब के चेहरे सेव रहते हैं जो कैमरा के सामने से क्रॉस करता है, बेहतर सुरक्षा है, पूरा सुरक्षा प्रबंध है, यात्री सुरक्षित है यहाँ।

रेडियो नेटवर्क और सैटेलाइट

उच्च दृश्यता और क्षेत्र के चुनौतीपूर्ण भूभाग के कारण मजबूत सुरक्षा व्यवस्था की गई है। इसलिए FRS के साथ–साथ, विशेष रूप से यात्रा मार्गों और बेस कैंपों पर हवाई और जमीनी निगरानी के लिए ड्रोन और CCTV कैमरे तैनात किए गए हैं। एक समर्पित रेडियो नेटवर्क और सैटेलाइट फोन खराब मोबाइल कवरेज वाले क्षेत्रों में निर्बाध संचार सुनिश्चित करते हैं। संभावित आतंकी खतरों का मुकाबला करने के लिए जैमर को चुनिंदा रूप से तैनात किया जाता है।

RFID टैग वाले तीर्थयात्रियों को ही तीर्थयात्रा के लिए जाने की अनुमति

रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन (RFID) टैग को अधिकारियों द्वारा उनकी गतिविधियों को ट्रैक करने, बेहतर भीड़ प्रबंधन और तीर्थयात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य कर दिया गया है। RFID टैग वाले तीर्थयात्रियों को ही तीर्थयात्रा के लिए जाने की अनुमति दी जाएगी।

RFID की विशेषता

जैसे ऑनलाइन केवाईसी होती है RFID कार्ड से हमें पता चलता है कि बंदा सही है या फेक है, क्योंकि हमारे पास आधार बेस्ड डेटा आता है और RFID हर साल की तरह इस साल भी मिलेगी। इस साल कियोस्क मशीन भी लगाई गई है, जो ऑन स्पॉट व्यक्ति का चेहरा देख कर पहचान लेगी। सुरक्षाबलों की तरफ से कैमरा लगे हैं। हर कोई अपने तरीके से पूरा काम कर रहा है। आज कल तकनीक का जमाना है, बहुत सी चीजें लगी हैं। इस कैमरा में श्राइन बोर्ड ने डाटा पहले से डाल रखा है, यही कैमरा गुफा पर भी लगे हैं। RFID के बिना किसी को भी एंट्री नहीं मिलेगी, कार्ड के बिना बैरिकेड नहीं खुलेगा।

आधुनिक गैजेट्स के अलावा विशेष QRT (त्वरित प्रतिक्रिया दल) आपात स्थितियों का जवाब देने के लिए रणनीतिक बिंदुओं पर तैनात किए जाएंगे। जोखिमों को कम करने के लिए मार्गों और शिविरों की नियमित सफाई की जाएगी, साथ ही तोड़फोड़ विरोधी अभियान भी चलाए जाएंगे।

तीर्थ यात्रियों के लिए कड़ी सुरक्षा व्यवस्था

जम्मू कश्मीर पुलिस कर्मियों के अलावा, यात्रा को सुरक्षित करने के लिए अतिरिक्त 581 अर्धसैनिक बटालियन तैनात की गई हैं। इसमें बेस कैंप, पारगमन मार्ग और गुफा मंदिर की सुरक्षा शामिल है। तीर्थयात्रा अवधि के दौरान दोनों मार्ग और गुफा नो फ्लाई जोन होंगे। जम्मू से कश्मीर तक बहुस्तरीय सुरक्षा ग्रिड के अंतर्गत 70,000 से अधिक जवान तैनात किए जाएंगे, जिनमें CAPF (CRPF, BSF, ITBP, SSB, CISF) के 42,000, J&K पुलिस के 15,000 और 15वीं कोर की सेना की इकाइयाँ शामिल हैं। तीर्थयात्रियों की सुरक्षा के लिए जम्मू से कश्मीर तक बहुस्तरीय सुरक्षा ग्रिड के तहत 70,000 से अधिक जवान तैनात किए जाएंगे।

प्राकृतिक और जलवायु चुनौतियों से निपटने के अलावा राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (NDRF) और राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल (SDRF) को बचाव कार्यों के लिए तैनात किया गया है। पहाड़ों पर प्रशिक्षित ITBP और सेना के कमांडो ऊँचाई वाले स्थानों पर तैनात हैं। त्वरित प्रतिक्रिया दल और बम निरोधक दस्ते 24/7 अलर्ट पर हैं। राजमार्गों (NH–44, NH–1) और यात्रा मार्गों पर 100 से अधिक चौकियाँ पहचान–पत्र और परमिट सत्यापित करेंगी। चंदनबाड़ी और डोमेल जैसे प्रवेश बिंदुओं पर तलाशी अनिवार्य है।

जम्मू से आधार शिविरों तक तीर्थयात्रियों के काफिले को सीआरपीएफ और सेना के वाहन सुरक्षा प्रदान करेंगे। शाम की असुरक्षित स्थितियों से बचने के लिए समय (सुबह 4 बजे से रात्री 10 बजे तक) का सख्ती से पालन किया जाता है।

यात्री सुविधाएँ

यात्रियों के लिए विशेष चिकित्सा सुविधाएँ, राशन और पेयजल की व्यवस्था, मोबाइल टॉयलेट, साइन बोर्ड, इंटरनेट कनेक्टिविटी और हेल्पलाइन सेवाएँ भी तेजी से तैयार की जा रही हैं।

अमरनाथ यात्रा का इतिहास

अमरनाथ की गुफा में बर्फ से बनने वाले शिवलिंग को खोजा था भृगु ऋषि ने। इन्हें अमरेश्वर भी कहा जाता है। यहाँ इस गुफा में बैठकर भगवान शिव ने पार्वती जी को अमर कथा सुनाया था। कथा सुनाने से पहले भगवान शिव ने जीवों को वहाँ से भगाने वाले राग में डमरू बजाया, सभी जीव भाग गए। एक शुक का छोटा बच्चा वहाँ बैठा रह गया। पार्वती जी के सोने पर वह शुक हाँ–हाँ करता रहा, शिवजी कथा कहते रहे, बाद में जब उन्होंने देखा कि पार्वती जी सो गई हैं, तो यह पता लगाया कि कौन हाँ–हाँ कर रहा था? शुक को मारने के लिए त्रिशूल चलाया। शुक भागते हुए ऋषि पत्नी के मुख में प्रविष्ट हो गया। दस वर्षों तक उनके गर्भ में रहने पर जिस बालक का जन्म हुआ उसका नाम शुकदेव मुनि था, जन्म लेते ही संन्यास ग्रहण कर वन को चले गए, क्योंकि अमरकथा से अमरत्व का ज्ञान तो अमरेश्वर शिव से उन्हें मिल ही गया था।

महाभारत में भी अमरनाथ का उल्लेख है। नीलमतपुराण में भी अमरनाथ का उल्लेख है। राजतरंगिणी (पुस्तक VII अ. 183) पुस्तक में कृष्णनाथ या अमरनाथ का उल्लेख है। ऐसा माना जाता है कि 11वीं शताब्दी ई. में रानी सूर्यमती ने इस मंदिर को त्रिशूल, बाणलिंग और अन्य पवित्र प्रतीक भेंट किए थे। प्रज्ञा भट्ट द्वारा शुरू की गई राजावलीपताका में अमरनाथ गुफा मंदिर की तीर्थयात्रा के बारे में विस्तृत संदर्भ हैं। इसके अलावा, कई अन्य प्राचीन ग्रंथों में इस तीर्थयात्रा के और भी संदर्भ हैं।

गुफा और शिवलिंग का उल्लेख अबुल फ़ज़ल की 16वीं सदी की रचना आइन–ए–अकबरी में मिलता है । उनके अनुसार, इस स्थल ने कई तीर्थयात्रियों को आकर्षित किया। वह ऋतुओं और चंद्रमा के अनुसार लिंगम के बढ़ने और घटने का वर्णन करता है। फ़्राँस्वा बर्नियर, एक फ्रांसीसी चिकित्सक, 1663 में कश्मीर की अपनी यात्रा के दौरान सम्राट औरंगज़ेब के साथ था। अपनी पुस्तक ट्रैवल्स इन मुगल एम्पायर में, वह अपने द्वारा देखी गई जगहों का विवरण प्रदान करता है, यह देखते हुए कि वह "सांगसफेद से दो दिन की यात्रा पर, अद्भुत संगम से भरी एक गुफा की यात्रा कर रहा था" जब उसे "सूचना मिली कि मेरे नवाब को मेरी लंबी अनुपस्थिति के कारण बहुत अधीर और बेचैनी महसूस हो रही है।" इस अंश में संदर्भित 'गुफा' अमरनाथ गुफा है वह लिखते हैं : "अद्भुत संगमों से भरी गुफा अमरनाथ गुफा है, जहाँ बर्फ के खंड, छत से टपकते पानी से बने स्टैलेग्माइट्स को कई हिंदू शिव की छवि के रूप में पूजते हैं।" सिस्टर निवेदिता ने नोट्स ऑफ़ सम वांडरिंग्स विद द स्वामी विवेकानंद में 1898 में स्वामी विवेकानंद की गुफा यात्रा के बारे में लिखा है।

भारत का पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ही इस गुफा का ज्ञात इतिहास पाँच हजार वर्षों का मानता है। यहाँ आद्य शंकराचार्य भी अपनी भारत भ्रमण की पदयात्रा में आए थे। जैनुलबुद्दीन नाम के शासक ने 1420–70 ईस्वी के दौरान, अमरनाथ गुफा की यात्रा की थी।

यात्रा रोकने के लिए आतंकियों की धमकी

1993 में, अमरनाथ तीर्थयात्रियों के खिलाफ पहली धमकी दी गई थी। हरकत–उल–अंसार ने 1992 में बाबरी ढांचे के विध्वंस के कारण यात्रा पर प्रतिबंध की घोषणा की थी। 1994, 1995 और 1998 में, हरकत– उल–मुजाहिदीन समूह ने तीर्थयात्रियों को धमकी दी, लेकिन यात्रा जारी रही।

बजरंगदल ने आतंकियों की धमकी के मध्य आरम्भ की अमरनाथ यात्रा

जिहादी आतंकियों ने अमरनाथ की यात्रा रोकने की धमकी लगातार हर वर्ष देने लगे, तो 1996 में देश भर से एक लाख बजरंगियों ने घोषणा करके एकत्र होकर अमरनाथ की यात्रा आरम्भ की और यात्रा पूर्ण किया। तब से विहिप–बजरंगदल के कार्यकर्ता और संघ विचार परिवार के लोग बड़ी सँख्या में यात्रा में शामिल होते हैं। संघ–विहिप के प्रयत्नों से यह यात्रा देशभर में अत्यधिक लोकप्रिय हो गई है। इस यात्रा में अब देशभर से बड़ी सँख्या में हिन्दू समाज के लोग सम्मिलित होते हैं। यह यात्रा लगातार निर्वाध चलती रही। आतंकियों ने लगातार यात्रा में विघ्न डालने का प्रयत्न किया, किन्तु हिन्दू समाज की प्रबल धार्मिक भावना और धार्मिक अस्मिता से जुड़े शौर्य ने यात्रा पर कभी भी संकट नहीं आने दिया।

बाबा अमरनाथ की यात्रा और भारत की वैज्ञानिक परंपराएँ

डॉ राकेश कुमार आर्य

संसार में आने से पहले मनुष्य परमपिता परमेश्वर से यह वचन देता है कि इस बार वह संसार में जाकर पवित्र कार्य करेगा। धार्मिक कार्यों में अपने आप को लगाए रखेगा। मानव जीवन को मोक्ष प्राप्ति का सर्वोत्तम माध्यम मानकर उसका सदुपयोग करेगा। परंतु जब संसार में आता है, तो, वह यहाँ की मोह माया में रम जाता है। अपने पथ से भटक जाता है। इस प्रकार मनुष्य अनादि काल से जीवन मरण के चक्कर में फंसा हुआ है। भीतर बैठा आत्म तत्व जीवन–मरण के इस चक्र से मुक्ति चाहता है। छूटना चाहता है। उसकी खोज है कि संसार में बार–बार आने से कैसे बचा जाए? जबकि मनुष्य है कि भीतर की बात को न सुनकर माया के आकर्षण में फंस जाता है। स्पष्ट है कि संसार में आकर परमपिता परमेश्वर को प्राप्त करना सांसारिक व्यक्तियों के लिए उतना आसान नहीं है, जितना माना जाता है, यद्यपि उपनिषद का उपदेश है कि वह परमपिता परमेश्वर बहुत दूर होकर भी बहुत निकट दूर है। इसका अभिप्राय है कि संसार के माया–मोह में फंसे हुए लोगों के लिए ईश्वर बहुत दूर की चीज है, जबकि इससे मुँह फेरकर बैठे लोगों के लिए वह बहुत निकट है। ऐसे लोग उससे नित्य प्रति वार्तालाप करने के अभ्यासी हो जाते हैं। संसार में रहकर परमपिता परमेश्वर को पाना अर्थात उस अजर–अमर, अनादि सत्ता को खोजना कठिन है। इसीलिए हमारे ऋषियों ने ऐसा कहा है कि उसे प्राप्त करने के लिए बहुत कुछ खोना पड़ता है। खपाना पड़ता है।

यही कारण है कि उसे अमर सत्ता की प्राप्ति के लिए अर्थात शिव को पाने के लिए हिमालय की गोदी में स्थित भगवान शिव को समर्पित अमरनाथ का मंदिर गुफा है। जहाँ शांत और एकांत स्थान में जाकर आध्यात्मिक अनुभूतियों की हिलोर अनुभव करते हुए व्यक्ति संसार की अजर–अमर शक्ति के साथ समन्वय स्थापित कर सके। इसी को लोगों ने तीर्थ का नाम दे दिया। जहाँ पर हर वर्ष लोग बर्फानी बाबा के दर्शन करने के लिए बड़ी सँख्या में पहुँचते हैं। यह एक गुफा है। गुफा जम्मू–कश्मीर के श्रीनगर के उत्तर–पूर्व में 135 किलोमीटर दूर स्थित है, जिसकी समुद्र तल से ऊँचाई करीब 13 हजार, 600 फीट है। इस पवित्र गुफा की लंबाई 19 मीटर, चौड़ाई 16 मीटर और ऊँचाई 11 मीटर है।

मानव अपने शरीर की रचना को देखता है। भीतर से इस शरीर की रचना कैसे हुई है? इसकी पाँच ज्ञानेंद्रियाँ, पाँच कर्मेंद्रियाँ मन ,बुद्धि, चित्त और अहंकार का अंतःकरण चतुष्टय – यह सब क्या है? इसके भीतर पाँच कोषों की कल्पना की गई है। उन सबके बारे में जानकारी लेता है, तो स्वयं ही आश्चर्यचकित हो जाता है। तब वह उस "बाबा बर्फानी" को भी खोजने का प्रयास करता है, जिसने यह सब कुछ रचा है और इतना अमूल्य मानव शरीर हमें प्रदान कर हम पर असीम अनुकंपा बरसाई है। उसे खोजने के लिए वह हृदय रूपी गुफा में प्रवेश करता है। उससे वार्तालाप करने का प्रयास करता है। विवेक और वैराग्य के होने पर धीरे–धीरे उस बाबा बर्फानी से अपना संवाद स्थापित करने में सफलता प्राप्त करता है। आनंद के उन क्षणों को दूसरों में बांटने का प्रयास करता है। लोगों को बताता है कि वह "बाबा बर्फानी" कितना दयालु है, अर्थात आत्म तत्व के भीतर भी बैठा हुआ परमात्मा

तत्व कितना दयालु और कृपालु है? इस बात की चर्चा करता है, जिसे सुनकर दूसरों में भी आनंद की वृद्धि होती है। अपने शरीर के बाद व्यक्ति संसार में भी ऐसी अनेक आश्चर्यजनक वस्तुओं को देखता है, जिनसे उसके भीतर कौतूहल उत्पन्न होता है। जिज्ञासा का भाव उत्पन्न होता है कि इनको बनाने वाला कौन है? इसके बाद वह अंतरिक्ष में सूर्य, चंद्र, तारे, आकाशगंगाओं आदि से अपना परिचय स्थापित करता है। उनसे संवाद करते समय उनसे भी यही प्रश्न करता है कि आपको बनाने वाला कौन है? कुल मिलाकर पूरे जीवन भर उसके संसर्ग और संपर्क में जो भी आता रहता है, उसके प्रति उसकी जिज्ञासा बढ़ती जाती है। वह सोचता जाता है कि आखिर वह शिव स्वरूप परम सत्ता कौन है? कहाँ है? क्या है? कैसी है? जिसने यह सारा चराचर जगत रचा है। जिसमें सारा चराचर जगत समाया हुआ है और जो सारे चराचर जगत में समाई हुई है। उस सत्ता से वह वार्तालाप करना चाहता है। भेंट करना चाहता है। उसी में समा जाना चाहता है। इसलिए वह अध्यात्म की लंबी यात्राओं पर निकलता है। एकांत में बैठकर वह आध्यात्मिक शांति की अनुभूति करते हुए, अपनी इस प्रकार की यात्रा का आनंद लेता है।

पुराणों में इस प्रकार की शांत और एकांत यात्रा को भौतिक–लौकिक जगत

अमर सत्ता की प्राप्ति के लिए अर्थात शिव को पाने के लिए हिमालय की गोदी में स्थित भगवान शिव को समर्पित अमरनाथ का गुफा मंदिर है। जहाँ शांत और एकांत स्थान में जाकर आध्यात्मिक अनुभूतियों की हिलोर अनुभव करते हुए व्यक्ति संसार की अजर–अमर शक्ति के साथ समन्वय स्थापित कर सके। इसी को लोगों ने तीर्थ का नाम दे दिया। जहाँ पर हर वर्ष लोग बर्फानी बाबा के दर्शन करने के लिए बड़ी सँख्या में पहुँचते हैं।

में भी घटित करने का प्रयास किया गया है। विचार किया गया है कि व्यक्ति लौकिक जगत में भी लंबी यात्राओं पर जाकर तीर्थाटन करते हुए आध्यात्मिक शक्तियों का अनुभव करे। कुछ देर के लिए अपने आप को संसार की मोह माया से विरक्त कर उस परम सत्ता के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करे, जो इस सारे चराचर जगत को चला रही है। इसके लिए वह घर के कलह पूर्ण परिवेश को छोड़कर तीर्थ के शांत एकांत स्थान पर बैठकर अपने आप से ही अपना संवाद स्थापित करे। अपने आप को खोजे और अपने बारे में सोचे। जिससे कि उसके भीतर विरक्ति के भाव उत्पन्न हों।

अमरनाथ वास्तव में वही दिव्य सत्ता है, जिससे वेदों ने ओम के नाम से पुकारा है। शब्दों का रूपांतरण करते–करते लोक भाषा में उसे लोगों ने अमरनाथ के नाम से प्रसिद्ध कर दिया।

हमें यह बात समझने की आवश्यकता है कि "आँखों से हम संसार की सभी वस्तुओं सहित ब्रह्माण्ड में सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति आदि ग्रहों एवं अन्य सौर मण्डल के सूर्य आदि को भी देखते हैं। अन्य सूर्य मण्डलों के सूर्य हमें सूर्य के प्रकाश में तो दृष्टि गोचर नहीं होते, परन्तु जब आकाश स्वच्छ हो और कृष्ण पक्ष की अमावस्या हो तो आकाश में जो तारे दिखाईं देते हैं, वह सभी प्रायः सूर्य, सूर्य के समान भूगोल व सौर परिवारों के मुख्य ग्रह, पिण्ड व लोक आदि हैं। इन सबको देख कर किसी भी विचारशील बुद्धिमान व्यक्ति के मन में विचार आ सकता है कि यह सब रचनायें किसके द्वारा कब बनी और इस समस्त ब्रह्माण्ड के मूल तत्व व पदार्थ अथवा सत्तायें कौन व क्या हैं ?"

इन्हीं मौलिक और तात्विक प्रश्नों का उत्तर खोजना बाबा अमरनाथ की खोज करना है। पौराणिक दृष्टिकोण से यह माना जाता है कि जिस गुफा में भगवान शिव और माता पार्वती का वास है, वहाँ पहुँचने से उनके अमरत्व का महत्व ज्ञात होता है। वास्तव में शिव परमपिता परमेश्वर के कल्याणकारी स्वरूप का नाम है और पार्वती यह प्रकृति है। लिंग परमपिता परमेश्वर की प्राण शक्ति का नाम है , जो इस संपूर्ण चराचर जगत को उसी प्रकार गतिशील कर रहा

है , जिस प्रकार प्राण तत्व हमारे शरीर में वास कर हमें गतिशील किये रखता है। लिंग की उपासना करना भी इस चराचर जगत के प्राण तत्व अर्थात ईश्वर की उपासना करना ही है। कल्याणकारी परमपिता परमेश्वर के शिव स्वरूप का ध्यान करने से जैसे हमारा कल्याण होता है, वैसे ही लोगों की मान्यता है कि "इस पवित्र गुफा के दर्शन करने से भक्तों की सभी अभिलाषाएँ पूरी होती हैं, हालांकि इसके दर्शन बेहद दुर्लभ हैं, बड़ी मुश्किलों के बाद भक्तगण इसके दर्शन करने के लिए यहाँ पहुँचते हैं।"

वेद ने भी कहा है कि वह परमपिता परमेश्वर हृदय रूपी गुफा में छुपा हुआ है। बैठा हुआ है। उसे खोजना आसान काम नहीं है। हमारी मान्यता है कि संसार में जितनी भी धार्मिक परंपराएँ हैं, उन सब के पीछे वेद का कोई ना कोई उत्कृष्ट चिंतन रहा है। आज सभी परंपराओं और धार्मिक रीति–रिवाजों के वैज्ञानिक स्वरूप को खोजने, समझने और तलाशने की आवश्यकता है। अमरनाथ की यह यात्रा वर्ष भर में केवल 45 दिन के लिए ही खोली जाती है। सामान्यतः यह यात्रा जुलाई–अगस्त के महीने में होती है।

यह भी जान लें कि संसार में जितनी भी योनियाँ हैं, उनमें मनुष्य योनि सर्वश्रेष्ठ है। वह इसलिए कि मनुष्य के पास मनन–चिन्तन तथा विवेक धारण करने के लिए ईश्वर ने उसके शरीर में सत्यासत्य का विवेक करने वाली बुद्धि दी है। अन्य सब इन्द्रियाँ तो थलचर व जलचर आदि सभी प्राणियों के पास हैं, परन्तु विवेक, बुद्धि ईश्वर ने केवल मनुष्यों को ही दी है।

विवेक कराने वाली बुद्धि ईश्वर ने मनुष्यों को इस लिए दी है कि जिससे वह सत्य को जानकर ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना–उपासना, यज्ञ, परोपकार, सेवा, ब्रह्मचर्यादि सत्य व्रतों का पालन करते हुए ईश्वर का साक्षात्कार कर, इससे जन्म–मरण के बन्धनों से छूट कर, बहुत लम्बी अवधि 31 नील 10 अरब 40 खरब वर्षों तक मोक्ष में पूर्ण सुख व आनन्द का भोग कर सके। हर पिता अपने पुत्र व पुत्रियों को सुख देना चाहता है, ऐसा ही ईश्वर भी चाहता है। ईश्वर का साक्षात्कार और मोक्ष की उपलब्धि करना ही मनुष्य जीवन का प्रयोजन है। यदि मनुष्य अपनी विवेक बुद्धि व वेदों की शिक्षाओं के विपरीत आचरण करता है, तो फिर वह जीवन–मृत्यु के बन्धन में फंस कर सुख व दुःखों में आबद्ध रहता है। आज अधिकांश लोग अज्ञान के मार्ग का अवलम्बन कर दुःखों से मुक्त होने के स्थान पर आसक्ति वाले कर्मों को करके दुःखों के बन्धन में फंस रहे हैं। इनसे मुक्ति का मार्ग केवल ज्ञानमार्ग ही है। अन्य कोई पथ व मार्ग नहीं है। यह ध्रुव सत्य है। इसलिए हमें शिव, शिवलिंग, पार्वती, बाबा अमरनाथ आदि शब्दों के रहस्यों पर विचार करना चाहिए और परम सत्य का अनुयायी होना चाहिए। अपनी लोक परंपराओं में हम वैज्ञानिक चिंतन खोजने का प्रयास करें। अपनी धार्मिक परंपराओं वैज्ञानिक पहलुओं पर विचार करें।

(लेखक सुप्रसिद्ध इतिहासकार और भारत को समझो अभियान समिति के राष्ट्रीय प्रणेता हैं।)

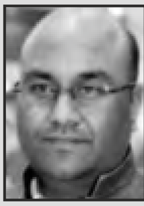

शस्त्रागार जिहाद राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए घातक, शासन संज्ञान ले

दिव्य अग्रवाल (लेखक व विचारक)

वर्षों पूर्व रेल जिहाद और सड़क जिहाद जैसे शब्दों को झुठलाने वाले लोग आज अचम्भित हैं कि मजहबी लोग इस प्रकार की जिहाद भी करते हैं। ठीक इसी प्रकार शस्त्रागार जिहाद है, जो पठानकोट, पंजाब और कश्मीर में अनेकों बार हुई, जिसको आतंकवाद का नाम दिया गया, जबकि यह मजहबी जिहाद का ही भाग है। मजहबी लोग काफिरों/गैर इस्लामिक समाज को तो प्रतिदिन किसी न किसी प्रकार मार ही रहे हैं, पर उनके जिहाद का मूल उदेश्य भारत पर कब्जा करना है। यदि गंभीरता से अवलोकन करेंगे, तो अनुभव करेंगे कि जहाँ–जहाँ भी भारतीय शस्त्रागार हैं और आयुध संग्रहण क्षेत्र है, उसके आस–पास मजहबी समाज ने अपनी बस्तियाँ, कालोनियों को स्थापित किया है। मेरठ कैंट हो या आगरा कैंट, चारों तरफ मजहबी समाज की घनी आबादी स्थापित हो चुकी है।

यही स्थिति गाजियाबाद हिंडन एयर फोर्स की है, जिसके आसपास पसौंडा, भोपुरा, फरुख नगर, शालीमार गार्डन, हिंडन विहार जैसी अनेकों कॉलोनियाँ हैं, जिनमें न केवल मजहबी आबादी ज्यादा है, अपितु इन क्षेत्रों में अवैध बाँग्लादेशी और रोहिंग्याओं ने भी अपने ठिकाने बना रखे हैं। यदि हम कश्मीर और पंजाब से सीख लें, तो वहाँ मिलिट्री जोन में काम करने वाले मजहबी मजदूरों ने ही राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ सदैव खिलवाड़ किया है। राष्ट्रहित में शासन से अनुरोध है कि हिंडन एयरफोर्स के साथ–साथ जहाँ भी हमारा आयुध संग्रहण एवं शस्त्र भण्डार है, वहाँ के आस–पास के क्षेत्रों की, कच्ची कॉलोनियों की, मोहल्लों की सघन जांच हो, अवैध रूप से रह रहे मजहबी लोगों की धरपकड़ हो और ऐसे क्षेत्रों में किरायेदारी पर भी पूर्ण प्रतिबंध हो। फरुखनगर जैसा क्षेत्र, जहाँ आज भी अवैध रूप से पटाखे आदि बनाये जाते हैं और यह गाँव हिंडन एयर फोर्स की बाउंड्री से बिलकुल लगा हुआ है, सोचिए सुरक्षा की दृष्टि से यह कितना घातक है? अतः सरकार से सादर अनुरोध है कि इस ओर संज्ञान लेने की कृपा करें।

divyelekh@gmail.com

अमरनाथ यात्रा के संस्मरण

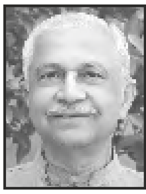

श्रीश देवपुजारी

मैंने अमरनाथ यात्रा 1984 में अपने माता पिता एवं अनुज के साथ की। यह जीवन का न भूलने वाला दिन था। एक तो प्रथम बार हिमालय चढ़ने का अनुभव और ऊपर से गुरुपूर्णिमा का दिन था। पहलगांव के पारंपरिक मार्ग को छोड़कर हमने बालटाल का छोटा रास्ता चुना, समय जो बचाना था! हमारे मार्गदर्शक थे श्री माकड़े। वे हर वर्ष नागपुर से एक बस यात्रियों से भरकर अमरनाथ ले जाते थे। उनका यह क्रम बहुत वर्षों तक चला। वे परम शिवभक्त थे, इसलिए प्रतिवर्ष गुरुपूर्णिमा के दिन वे अमरनाथ में होते थे। उस दशक में यात्रा गुरुपूर्णिमा से ही आरम्भ होती थी। कारण उस समय तक हिम से निर्मित भगवान शिव का प्रतीक पूर्ण रूप धारण कर लेता था। आगे चलने वाली यात्रा के कारण शिवलिंग पिघलता था। श्रावण पूर्णिमा के दिन जब परंपरागत यात्री (छड़ी मुबारक) पहलगांव मार्ग से पैदल आते थे, तब तक संपूर्ण शिवलिंग के दर्शन कदाचित ही हो पाते थे।

हम एक बस के यात्री गुरुपूर्णिमा के दो दिन पूर्व ही नागपुर से श्रीनगर पहुँच गए थे। स्वाभाविक एक दिन पूर्णरूप से श्रीनगर घूमने में लगा। उस समय आतंकवाद का दौर प्रारंभ नहीं हुआ था, किन्तु आहट मिल रही थी। हुआ यह कि हम शिकारे से नौका विहार कर आये। जब धन देने की बारी आयी, तो नौका चालक अधिक धन माँगने लगा। विवाद बढ़ता देख सीढ़ियों पर बैठे, पतलून और कुर्ता पहने, शिक्षित लगने वाले एक मध्यवयस्क व्यक्ति को मैंने आग्रह किया कि वह कश्मीरी भाषा में उस नौकाचालक को समझाए। उसने बताये अनुसार नौकाचालक को स्थानीय भाषा में समझाया।

धन्यवाद करते समय मैंने पूंछ लिया की आप कहाँ रहते हो ?

उत्तर आया – आपके दिल्ली में।

मैंने पूछा – दिल्ली में क्या करते हो?

समाधान मिला – आपकी सरकार की नौकरी करता हूँ।

मैंने पूंछ ही लिया क्या सरकार आपकी नहीं है ?

प्रत्युत्तर आया – नहीं।

प्रत्यक्ष यात्रा

दूसरे दिन हम प्रातः तीन बजे श्रीनगर के होटल में ही स्नान कर बालटाल के लिए निकले। बालटाल में खच्चर किराये से लेकर हिमालय चढ़ने लगे। रास्ता कच्चा और संकरीला था। एक समय एक ही खच्चर सरलता से जा सकता था। सामने से आनेवाले खच्चर पर सवार यात्री के पैर से घर्षण कर ही आगे निकल पाते थे। उस समय यदि खच्चर के पैर से एखाद पत्थर नीचे की गहरी खाई में लुढ़कता था, तो खच्चर पर सवार व्यक्ति भयाकम्पित हो जाता था। तब खच्चर का स्वामी सवार व्यक्ति को धैर्य रखने के लिए आग्रह करता था। उसका तर्क था कि खच्चर का भी तो अपना प्राण है। उसे भी अपने प्राणों से प्रेम है। वह स्वयं को बचाकर ही चलेगा।

कच्चे मार्ग की यात्रा लम्बी थी। अमरनाथ गुफा के लगभग तीन किलोमीटर पूर्व खच्चर रुक गया। कारण आगे पूरा मार्ग हिमाच्छादित था। खच्चर के स्वामी मुसलमान थे। रमजान का महीना चल रहा था। उन्होंने निवेदन किया कि रोजा छोड़ने के लिए भोलेनाथ का प्रसाद बचाकर लाइएगा।

हमने हिम पर काम कर सकने वाले जूते, ओवर कोट एवं फर की टोपी किराए से ली थी। उस परिधान के साथ, आगे कील लगा एक डंडा भी था। उतने में किसी की पुकारने की ध्वनि गूंजी। जिस दिशा से पुकारा जा रहा था उस ओर देखा तो एक व्यक्ति विनम्र भाव से सबको भोजन करने का आग्रह कर रहा है, कह रहा था कि घी में बनी रसोई है, गरमा–गरम पूरी छान कर खिलाएंगे। मेरे तो आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। इतनी उंचाई पर, हिमाच्छादित पर्वत पर, इतनी ठंड में इस शंकर जी के भक्त ने लंगर लगाया है। उसका धन्यवाद कर और आश्चर्य व्यक्त कर हम गुफा की ओर बढ़े।

जैसे ही हम गुफा के सम्मुख पहुँचे तो देखा पानी का एक छोटा प्रवाह बह रहा है। जल के ऊपर तो हिम की परत जमी हुई थी, किन्तु अन्दर जल विद्यमान है। यात्रा में हमारे साथ एक सेवा निवृत्त सरकारी कर्मचारी थे। उन्होंने झोले से लोटा निकाला, कपडे उतारे और लगे स्नान करने। मैंने यह कहकर रोकना चाहा कि हमने प्रातः होटल में स्नान किया है, इस ठण्ड में बर्फ जैसे पानी से स्नान करने से ठण्ड लग जायेगी। उन्होंने एक न सुनी। कहा – "कुछ नहीं होगा" और वास्तव में आगे पूरे प्रवास में उन्हें कुछ नहीं हुआ। तब मेरी समझ में आया कि मन में श्रद्धा है, तो शरीर कुछ भी सहन कर सकता है। भव्य शिवलिंग के दर्शन से कृतार्थ जीव ने मन ही मन शिव को ही गुरु मान लिया, गुरुपूर्णिमा का दिन जो था। पूजा अर्चना के बाद प्रसाद चढ़ाया।

वापस जाने की त्वरा के कारण लंगर में प्रसाद ग्रहण कर हम खच्चर से नीचे की ओर प्रस्थान कर गए। उस समय सायं के सात बज रहे थे। सूर्यास्त नहीं हुआ था। मार्ग में लगभग आठ बजे सूर्यास्त होने पर खच्चर वाले रुक गए। हमसे प्रसाद मांगा और रोजा छोड़ा। पानी पीकर आगे की यात्रा आरम्भ हुई। मैंने खच्चर वाले से कहा कि आप बर्फानी बाबा का प्रसाद ग्रहण करते हैं, यह एक आश्चर्य है। महाराष्ट्र में तो हिन्दू भगवान का प्रसाद ग्रहण करना इस्लाम में निषिद्ध माना जाता है, तो खच्चर वाला बोला हमारी रोजी–रोटी तो अमरनाथ यात्रा के कारण ही चलती है, इसलिए हमारी बर्फानी बाबा पर श्रद्धा है।

बालटाल पहुँचते–पहुँचते हमें रात हो गयी। रात का विश्राम टेंट में कर हम दूसरे दिन गुलमर्ग के लिए चले गए। इस यात्रा में एक ओर केंद्र सरकार की नौकरी करने वाले, दिल्ली में निवास करने वाले एवं शिक्षित व्यक्ति की अलगाववादी मनोवृत्ति प्रकट हुई, तो शिव को श्रद्धाभाव से देखने वाले अशिक्षित खच्चरवालों का रूप भी देखा। इन प्रसंगों का मनन करते –करते हम नागपुर वापस लौट आए।

स्वामी अखिलेश्वरानंद गिरि
महंत भारत माता मंदिर, हरिद्वार

शिवजी की अमरकथा का स्थल है
अमरनाथ

अमरनाथ में 'अमरकथा' जब कही, सुनी थी पार्वती
उत्तराखण्ड में लगा के आसन बैठे हैं कैलाशपति

हमारे देश आर्यावर्त (प्राचीन भारतीय भू खण्ड) जिसे भरत खण्ड और आधुनिक काल में 'भारत वर्ष' इस नाम से हम जानते हैं, जिसकी विश्व विश्रुति साँस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक भूखण्ड के रूप में हुई है। हम यदि आदिशंकर (आद्य शंकराचार्य भगवान) की दृष्टि से देखें, तो इस भौतिक जगत को देखने की बाह्य दृष्टि तो आमजनों जैसी ही बनी रहेगी, परन्तु जब साधक की दृष्टि ज्ञानमयी कृत्वा तब पश्येत ब्रह्ममयं जगत् में परिवर्तित हो जाती है।

आद्यशंकर का उद्घोष ही रहा है 'सर्वं खलिवदं ब्रह्म' ब्रह्म से अर्थात चैतन्य से अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। जब व्यक्ति के जीवन में प्राक्तबन संस्कारों के बल पर और अध्यात्म साधना के आश्रय में दृष्टि परिमार्जित हो जाती है, तब संसार 'संसार नहीं रह जाता', ऐसा बहुत थोड़े से लोगों के जीवन में होता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी रचना मानस में बहुत स्पष्ट संकेत कागभुसुण्डि और पक्षिराज गरूड़ के संवाद प्रसंग में किया है–

नर सहस्रमहँ सुनहुं पुरारी
कोउ इक होय धर्मव्रत धारी
धर्मशील कोटिक महँ कोई
विशय विमुख विरागरत होई
कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहहिं
सम्यक्ज्ञान सकृत कोउ लहहिं
ज्ञानवंत कोटिक मह कोउ
जीवन मुक्त ब्रह्म पर सोउ

जीवन में श्रवण, मनन, निरिध्यासन का जिन्हें अभ्यास हो गया है, उन्हें 'विमल दृष्टि' अपने आराध्य की कृपा से मिल जाती है, हृदयाकाश में जो अज्ञान का आवरण दिव्य देव प्रकाश को आच्छादित कर देता है, वह गुरु कृपा से (अज्ञान का पर्दा फट जाता है) और उघरहिं विमल विलोचन हिय के सूझहिं रामचरित मनिमानिक–गुपुत प्रकट जो नहँ जेहि खानिक–अतः हम भारतीयों की जब आध्यात्मिक दृष्टि जाग्रत हो जाती है। तब भौतिक जगत भी रूपान्तरित हो जाता है। हिमाच्छादित विशाल पर्वत, उसके सभी शिखर चैतन्य हो उठते हैं और वह कंकड–पत्थर मृदा का ढेर पहाड़ चैतन्य से आवेष्टित 'नगाधिराज' एक जीवन चेतना के रूप में दिखने लगता है। उस दिव्य चेतना की अनंत विशेशताएँ जीवन को धन्य बना देती हैं। पर्वत श्रेणियों के उत्तुंग शिखर पर देवाधिदेव महादेव प्रभु अमरनाथ जिसे हम कैलाशपति भी कहते हैं। अमरकथा का रसपान कराते दृष्टिगोचर होते हैं।

भारतवर्ष की धरती पर वह पवित्र धरा है। जिसमें अनेक तीर्थों की उद्भावना परिपूरित है। भारतवर्ष के उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम

चतुर्दिक तीर्थों की एक श्रंखला है, जो 'यहाँ जन्मे सभी को अपनी ओर बरबस आकर्षित करती है।' भारत के चतुर्दिक परम्परागत रूप से स्थापित तीर्थ स्थलों ने भारतीय भूखण्ड को कसकर रखा है, जिसके कारण भारत भारत है—जो चार प्रकार से यहाँ के निवासियों को उदभाषित होता है 1. साँस्कृतिक भारत, 2. धार्मिक भारत, 3. आध्यात्मिक भारत, 4. भौगोलिक (भूखण्डीय भारत)।

भारतीय भू खण्ड में तीर्थों का उदभव नैसर्गिक तथा देश काल और परिस्थितिजन्य धटित महत्वपूर्ण घटनाओं के कारण हुआ है, जिसका विवरण हमें महर्षि वेदव्यास प्रणीत अठारह पुराणों में सहज रूप से मिलता है। ब्रह्मवैवर्त पुराण, स्कन्द पुराण, कूर्मपुराण आदि में तीर्थो का विस्तृत विवरण उपलब्ध है। हिमाच्छादित उत्तुंग शिखर पर स्थापित अमरनाथ तीर्थ का भी ऐतिहासिक संदर्भ शिव—पार्वती संवाद से ही आरंभ होता है। कैलाश पर्वत के शिखर पर देवाधिदेव महादेव का नैरन्तर्य निवास भूतभावन महेश्वर की साधना तपःस्थली तो है ही, उनकी लीला—क्रीड़ा स्थली भी है। ऐसे सात्विक और शीतल वातावरण में एकाग्रचित्तता जीवन के रहस्य को जानने और विविध जिज्ञासाओं के समाधान का समुचित और अनुकूल वातावरण निर्माण में सहायक है। ऐसे में जीवन की अमरता का बोध हेतु उदभूत प्रश्न ने भगवती पार्वती के मन में वह जिज्ञासा उत्पन्न कर दी, जिससे आत्म—अनात्म का समग्र ज्ञान जीव की परम साधना का परिणाम है। उन्होंने अपने आराध्य देव महादेव से प्रार्थना की कि मुझे आप अमरकथा सुनाईये और भगवान शंकर ने सुनाना आरंभ किया और पार्वती ने उस कथा को मनोयोग से सुना, किन्तु कथा सुनते—सुनते उन्हें निद्रा आ गई और उसी परिक्षेत्र में एक तोते के अंडे में प्राणों का संचार हुआ और उसके कथा श्रवण करते—करते उसकी प्रसुप्त चेतना जागृत हो गई। वह हुंकारी भरने लगा बाद में वही शुक पक्षी श्री शुकदेव के रूप में राजा परीक्षित को भगवत्कथारूपी अमृतपान कराने वाला अवधूत शुकदेव हुआ।

ऐसा पवित्र तीर्थ अमरनाथ लोक जीवन की अदभुत आकर्षण का केन्द्र हो गया, वहाँ प्रतिवर्ष बर्फ का शिवलिंग स्वाभाविक रूप से निर्मित होता है। लाखो आस्थावान लोग वहाँ प्रतिवर्ष जाकर भगवान अमरनाथ के प्राकृतिक हिमाच्छादित शिव लिंग का दर्शन कर जीवन की धन्यता का अनुभव करते हैं।

इन्हीं शिवलिंग के कारण हिमालयपर्वत को नगाधिराग की संज्ञा मिली है। अमरनाथ की पवित्र गुफा का रहस्य किसे प्रथम ज्ञात हुआ, इसका अनेक प्रकार की किवदंतियाँ प्रचलित हैं। यह शोध का विषय हो सकता है, किन्तु हम—आप इस पारम्परिक सत्य को झुठला नहीं सकते। यह पवित्र तीर्थ सृष्टि के आदि (आरम्भिक काल) से है। नैसर्गिक रूप से ही स्थापित है। इस कारण से भारतीय भूखण्ड की पहचान विश्वविश्रुत है, जो दुर्लभ तीर्थ स्थान है। यहाँ की नैसर्गिक छटा, विशुद्ध, शांत, सात्विक वातावरण इस परिक्षेत्र की शीतल, मंद, सुगन्धयुक्त वायु सहज रूप से जीव के अंतःकरण की परिशुद्धि का कारण है और शुद्धान्तःकरण में वयं सर्वे अमृतस्य पुत्राः का बोध करा देने में समर्थ हैं।

इस तीर्थ के वैज्ञानिक महत्व को मानस की एक चौपाई के माध्यम से भी समझा जा सकता है। जल हिम उपल क्लिगतहिं जैसे, रासायनिक घटकों का सम्मिलन एक अदभुत रचना को जन्म देती है। जल तरल रासायनिक है, किन्तु उसकी राशि का संगठन वायु एवं जल की शीतलता के कारण एक ठोस पदार्थ की संरचना कर हम सनातनियों के उपास्य देव के लिंगमय देह का सृजन कर मानव मात्र के आकर्षण का कारण बन जाता है। इसे अंधविश्वास नहीं प्रत्यक्ष अनुभूति का विषय भौतिक विज्ञानी भी स्वीकारते हैं।

संत शिरोमणि जगद्गुरु रविदास जी महाराज एवं उनकी परम शिष्या मीराबाई जी का समागम कार्यक्रम

संत शिरोमणि जगद्गुरु रविदास जी महाराज के अनन्य भक्त है, संत श्री वीरसिंह जी हितकारी। वह बुलंदशहर जिले के रंगपुर गाँव में रहते हैं। हर साल गाँव में 'संत शिरोमणि जगद्गुरु रविदास जी महाराज एवं उनकी परम शिष्या मीराबाई जी का' समागम करते हैं। संत और संगतें बड़ी सँख्या में भाग लेते हैं। सारी रात कीर्तन और सत्संग होता है। इस वर्ष मैं भी इस समागम का हिस्सा बन सका। गुरु रविदास जी ने मुगलों की गुलामी के काल में, रूढ़ियों में जकड़े हिन्दू समाज को निर्गुण ब्रह्म का उपदेश दिया। पुरुषार्थ का जीवन जीने के लिए प्रवृत्त किया। हिन्दू समाज ऐसे संतों का हमेशा ऋणी रहेगा। यह रात मेरे लिए उत्साह और आनंद की रही। मेरे साथ श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ के अध्यक्ष श्री सुरजीत, पीठ के दिल्ली के अध्यक्ष श्री मनोज जी और विहिप के पदाधिकारी भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

बाबा अमरनाथ यात्रा का प्राचीन इतिहास

– अनिरुद्ध जोशी

हिंदुओं के सबसे बड़े तीर्थ स्थल अमरनाथ के बारे में बहुत कम ही लोग विस्तार से जानते होंगे। यहाँ अमरनाथ से जुड़ी प्राचीन, पौराणिक और रहस्यमयी जानकारी जरूर जानिए।

1. हिन्दू तीर्थ अमरनाथ की गुफा कश्मीर के श्रीनगर से करीब 145 किलोमीटर की दूरी पर हिमालय पर्वत श्रेणियों में स्थित है।
2. अमरनाथ यात्रा पर जाने के लिए 2 रास्ते हैं– एक पहलगाम होकर जाता है और दूसरा सोनमर्ग बालटाल से जाता है।
3. यहाँ की यात्रा हिन्दू माह अनुसार आषाढ़ की शुक्लपक्ष सप्तमी से प्रारंभ होती है और श्रावण पूर्णिमा तक चलती है। यात्रा के अंतिम दिन छड़ी मुबारक यात्रा होती है।
4. अमरनाथ गुफा के शिवलिंग को "अमरेश्वर" कहते हैं। पौराणिक मान्यता अनुसार इस गुफा को सबसे पहले भृगु ऋषि ने खोजा था। तब से ही यह स्थान शिव आराधना और यात्रा का केंद्र है।
5. इस गुफा में भगवान शंकर ने कई वर्षों तक तपस्या की थी और यहीं पर उन्होंने माता पार्वती को अमर कथा सुनाई थी, अर्थात अमर होने के प्रवचन दिए थे।
6. गुफा की परिधि लगभग 150 फुट है और इसमें ऊपर से केन्द्र में बर्फ के पानी की बूंदें टपकती रहती हैं। टपकने वाली हिम बूंदों से लगभग दस फुट लंबा शिवलिंग बनता है। हालांकि बूंदें तो और भी गुफाओं में टपकती हैं, लेकिन वहाँ यह चमत्कार नहीं होता।
7. बर्फ की बूंदों से बनने वाला यह हिमलिंग चंद्र कलाओं के साथ थोड़ा–थोड़ा करके 15 दिन तक बढ़ता रहता है और चन्द्रमा के घटने के साथ ही घटना शुरू होकर अंत में लुप्त हो जाता है।
8. अमरनाथ की यात्रा करने के प्रमाण महाभारत और बौद्ध काल में भी मिलते हैं। ईसा पूर्व लिखी गई कल्हण की "राजतरंगिनी तरंग द्वितीय" में इसका उल्लेख मिलता है। अँग्रेज लेखक लारेंस अपनी पुस्तक "वैली ऑफ कश्मीर" में लिखते हैं कि पहले मट्टन के कश्मीरी ब्राह्मण अमरनाथ के तीर्थयात्रियों की यात्रा करवाते थे। बाद में बटकुट में मलिकों ने यह जिम्मेदारी संभाल ली।
9. विदेशी आक्रमण के कारण 14वीं शताब्दी के मध्य से लगभग 300 वर्ष की अवधि के लिए अमरनाथ यात्रा बाधित रही। कश्मीर के शासकों में से एक "जैनुलबुद्दीन" (1420–70 ईस्वी) ने अमरनाथ गुफा की यात्रा की थी।
10. मान्यता अनुसार भगवान शिव ने माता पार्वती को जब अमरत्व का रहस्य सुना रहे थे, तब इस रहस्य को शुक (कठफोड़वा या तोता) और दो कबूतरों ने भी सुन लिया था। यह तीनों ही अमर हो गए। कुछ लोग आज भी इन दोनों कबूतरों को देखे जाने का दावा करते हैं।
11. शिव जब पार्वती को अमरकथा सुनाने ले जा रहे थे, तो उन्होंने अनंत नागों को अनंतनाग में छोड़ा, माथे के चंदन को चंदनवाड़ी में उतारा, अन्य पिस्सुओं को पिस्सू टॉप पर और गले के शेषनाग को शेषनाग नामक स्थल पर छोड़ा।
12. पुराण के अनुसार काशी में दर्शन से दस गुना, प्रयाग से सौ गुना और नैमिषारण्य से हजार गुना पुण्य देने वाले श्री बाबा अमरनाथ के दर्शन हैं। जय अमरनाथ।
13. यह भी जनश्रुति है कि मुगल काल में जब कश्मीरी पंडितों का कत्लेआम किया जा रहा था, तो पंडितों ने बाबा अमरनाथ के यहाँ प्रार्थना की थी। उस दौरान वहाँ से आकाशवाणी हुई थी कि आप सभी लोग सिख गुरु से मदद मांगने के लिए जाएँ। वे सिख गुरु, गुरु तेगबहादुर जी महाराज थे।

पुज्य गुरु तेगबहादुर जी कश्मीर के हिन्दुओं के आग्रह पर धर्म की रक्षा के लिए आगे आए और बाद में उनका बलिदान भी हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए ही हुआ।

(वेबदुनिया डाट कॉम से साभार)

बढ़ता प्लास्टिक प्रदूषण दुनियाँ की जटिल पर्यावरण समस्या

ललित गर्ग

बढ़ते तापमान, बदलते जलवायु एवं ग्लोबल वॉर्मिंग की वजह से ग्लेशियर तेजी से पिघल कर समुद्र का जलस्तर तीव्रगति से बढ़ा रहे हैं। जिससे समुद्र किनारे बसे अनेक नगरों एवं महानगरों के डूबने का खतरा मंडराने लगा है। इंसानों को प्रकृति, पृथ्वी एवं पर्यावरण के प्रति सचेत करने के लिये विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाता है, जो पर्यावरण, प्रकृति एवं पृथ्वी के लिए सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय दिवस है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोज्य यह दिवस दुनियाँ भर के लाखों लोगों को हमारे ग्रह की सुरक्षा और पुनर्स्थापना के सांझा मिशन के साथ एकजुट करता है। बढ़ता प्लास्टिक प्रदूषण दुनियाँ की एक गंभीर एवं जटिल समस्या है, इसीलिये 2025 में इस दिवस की थीम प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करने पर केंद्रित है। कोरिया गणराज्य वैश्विक समारोह की मेजबानी करेगा। दशकों से प्लास्टिक प्रदूषण दुनियाँ के हर कोने में फैल चुका है, यह हमारे पीने के पानी, हमारे खाने, हमारे शरीर, हमारे पर्यावरण में समा रहा है। इस प्लास्टिक कचरे की गंभीर समस्या से निपटने का एक वैश्विक संकल्प निश्चित ही एक समाधान की दिशा बनेगा। हर साल 430 मिलियन टन से अधिक प्लास्टिक का उत्पादन होता है, जिसमें से लगभग दो–तिहाई केवल एक बार उपयोग के लिए होता है और जल्दी ही फेंक दिया जाता है।

1973 से संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) के नेतृत्व में पर्यावरण जागरूकता के लिए यह दिवस सबसे बड़ा वैश्विक अभियान बन गया है, जो आज की सबसे गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए 150 से अधिक देशों के विशाल वैश्विक दर्शकों को शामिल करता है। गत वर्ष इस दिवस की मेजबानी करते हुए सऊदी अरब ने भूमि बहाली, मरुस्थलीकरण और सूखे से निपटने की क्षमता पर प्रकाश डालते हुए सकारात्मक प्रयासों का जश्न मनाया और पर्यावरण के मुद्दों पर काम करने वाले निजी और परोपकारी संगठनों के लिए अधिक समर्थन और वित्त पोषण की घोषणा की। यह सर्वविदित है कि इंसान व प्रकृति के बीच गहरा संबंध है। इंसान के लोभ, सुविधावाद एवं तथाकथित विकास की अवधारणा ने पर्यावरण का भारी नुकसान पहुँचाया है, जिसके कारण न केवल नदियाँ, वन, रेगिस्तान, जलस्रोत सिकुड़ रहे हैं, बल्कि ग्लेशियर भी पिघल रहे हैं, तापमान का 50 डिग्री पार करना जो विनाश का संकेत तो है ही, जिनसे मानव जीवन भी असुरक्षित होता जा रहा है। इन वर्षों में बढ़ी हुई गर्मी एवं तापमान ने न केवल जीवन को जटिल बनाया, बल्कि अनेक लोगों की जान भी गयी। पूरी दुनियाँ में बढ़ता प्लास्टिक प्रदूषण, जलवायु अराजकता और जैव विविधता विनाश का एक जहरीला मिश्रण स्वस्थ भूमि को रेगिस्तान में बदल रहा है, संपन्न पारिस्थितिकी तंत्र को मृत क्षेत्रों में बदल रहा है और मानव जीवन पर तरह–तरह के खतरे पैदा कर रहा है।

प्रकृति को पस्त करने, वायु एवं जल प्रदूषण, कृषि फसलों पर घातक प्रभाव, मानव जीवन एवं जीव–जन्तुओं के लिए जानलेवा साबित होने के कारण समूची दुनियाँ में बढ़ते प्लास्टिक एवं माइक्रोप्लास्टिक के कण एक बड़ी चुनौती एवं संकट हैं। पिछले दिनों एक अध्ययन में मनुष्य के मस्तिष्क में प्लास्टिक के नैनो कणों के पहुँचने पर चिंता जतायी गई थी। दावा था कि प्रतिदिन सैकड़ों माइक्रोप्लास्टिक कण सांसों के जरिये हमारे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। ऐसे तमाम नये राष्ट्रीय–

अंतर्राष्ट्रीय शोध–सर्वेक्षण– अध्ययन चेतावनी दे रहे हैं कि हमारी सांसों, प्रकृति, पर्यावरण, पेयजल व फसलों में घातक माइक्रोप्लास्टिक की मौजूदगी एक गंभीर संकट है। संकट तो यहाँ तक बढ़ गया है कि प्लास्टिक के कण पौधों की प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया को प्रभावित करने लगे हैं, जिससे खाद्य श्रृंखला में शामिल कई खाद्यान्नों की उत्पादकता में गिरावट आ रही है। ऐसा निष्कर्ष अमेरिका–जर्मनी समेत कई देशों के सांझे अध्ययन के बाद सामने आया है। दरअसल प्लास्टिक कणों के हस्तक्षेप के चलते पौधों के भोजन सृजन की प्रक्रिया बाधित हो रही है। इस तरह माइक्रोप्लास्टिक की दखल भोजन, हवा व पानी में होना न केवल प्रकृति, कृषि, पर्यावरण वरन मानव अस्तित्व के लिए गंभीर खतरे की घंटी ही है। जिसे बेहद गंभीरता से लिया जाना चाहिए और सरकारों को इस संकट से मुक्ति की दिशाएँ उद्‌घाटित करने के लिये योजनाएँ बनानी चाहिए, इसके लिए इस वर्ष की थीम से व्यापक बदलाव की संभावनाएँ हैं।

माइक्रोप्लास्टिक हमारे वातावरण का एक हिस्सा बन चुके हैं। प्लास्टिक की बहुलता एवं निर्भरता के कारण मौत हमारे सामने मंडरा रही है। हम चाहकर भी प्लास्टिकमुक्त जीवन की कल्पना नहीं कर पा रहे हैं, प्लास्टिक प्रदूषण के खतरों को देखते हुए विभिन्न देशों की सरकारों ने ठान लिया है कि सिंगल यूज प्लास्टिक के लिए कोई जगह नहीं होगी। भारत में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पूर्व में ही देश को स्वच्छ भारत मिशन के तहत प्लास्टिक कचरे से मुक्त करने की अपील करते हुए एक महाभियान का शुभारंभ कर चुके हैं। प्लास्टिक के कारण देश ही नहीं, दुनियाँ में विभिन्न तरह की समस्याएँ पैदा हो रही हैं। इसके सीधे खतरे दो तरह के हैं। एक तो प्लास्टिक में ऐसे बहुत से रसायन होते हैं, जो कैंसर का कारण माने जाते हैं। इसके अलावा शरीर में ऐसी चीज जा रही है, जिसे हजम करने के लिए हमारा शरीर बना ही नहीं है, यह भी कई तरह से स्वास्थ्य की जटिलताएँ पैदा कर रहा है। इसलिए आम लोगों को ही इससे मुक्ति का अभियान छेड़ना होगा, जागृति लानी होगी।

शोधकर्ताओं ने केरल में दस प्रमुख ब्रांडों के बोतलबंद पानी को अध्ययन का विषय बनाया है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि प्लास्टिक की बोतल के पानी का इस्तेमाल करने वाले व्यक्ति के शरीर में प्रतिवर्ष 153 हजार प्लास्टिक कण प्रवेश कर जाते हैं। पिछली सदी में जब प्लास्टिक के विभिन्न रूपों का अविष्कार हुआ, तो उसे विज्ञान और मानव सभ्यता की बहुत बड़ी उपलब्धि माना गया था, अब जब हम न तो इसका विकल्प तलाश पा रहे हैं और न इसका उपयोग ही रोक पा रहे हैं, तो क्यों न इसे विज्ञान और मानव सभ्यता की सबसे बड़ी असफलता एवं त्रासदी मान लिया जाए?

अमेरिका के जियोलॉजिकल सर्वे ने यहाँ बारिश के पानी के नमूने जमा किए। ये नमूने सीधे आसमान से गिरे पानी के थे, बारिश की वजह से सड़कों या खेतों में बह रहे पानी के नहीं। जब इस पानी का विश्लेषण हुआ, तो पता चला कि लगभग 90 फीसदी नमूनों में प्लास्टिक के बारीक कण या रेशे थे, जिन्हें माइक्रोप्लास्टिक कहा जाता है। ये इतने सूक्ष्म होते हैं कि हम इन्हें आँखों से नहीं देख पाते। लगातार पांव पसार रही माइक्रोप्लास्टिक की तबाही इंसानी गफलत को उजागर तो करती रही है, लेकिन समाधान का कोई रास्ता प्रस्तुत नहीं कर पाई। ऐसे में अगर विश्व पर्यावरण दिवस पर प्लास्टिक के संकट को दूर करने की कुछ ठानी है, तो उसका स्वागत होना ही चाहिए। प्लास्टिक प्रदूषण की उससे भी ज्यादा खतरनाक एवं जानलेवा स्थिति है, यह एक ऐसी समस्या बनकर उभर रही है, जिससे निपटना अब भी दुनियाँ के ज्यादातर देशों के लिए एक बड़ी चुनौती है। कुछ समय पहले एक खबर ऐसी भी आई थी कि एक चिड़ियाघर के दरियाई घोड़े का निधन हुआ, तो उसका पोस्टमार्टम करना पड़ा, जिसमें उसके पेट से भारी मात्रा में प्लास्टिक की थैलियाँ मिलीं, जो शायद उसने भोजन के साथ ही निगल ली थीं। कनाडाई वैज्ञानिकों द्वारा माइक्रोप्लास्टिक कणों पर किए गए विश्लेषण में चौंकाने वाले नतीजे मिले हैं। विश्लेषण में पता चला है कि एक वयस्क पुरुष प्रतिवर्ष लगभग 52000 माइक्रोप्लास्टिक कण केवल पानी और भोजन के साथ निगल रहा है। इसमें अगर वायु प्रदूषण को भी मिला दें, तो हर साल करीब 1,21,000 माइक्रोप्लास्टिक कण खाने–पानी और सांस के जरिए एक वयस्क पुरुष के शरीर में जा रहे हैं। अमेजन एवं फ्लीपकार्ट जैसे ऑनलाइन व्यवसायी प्रतिदिन 7 हजार किलो प्लास्टिक पैकेजिंग बैग का उपयोग केवल भारत में करते हैं। इन कम्पनियों को भी प्लास्टिकमुक्त दुनियाँ के घेरे में लेने के लिये कठोर कदम उठाने चाहिए। संकट का एक पहलू यह भी है कि लोग सुविधा को प्राथमिकता देते हैं, लेकिन प्लास्टिक के दूरगामी घातक प्रभावों को लेकर आँखें मूंद लेते हैं।

क्या 'आत्मनिर्भर भारत' पश्चिमी दुनियाँ और चीन के लिए खतरा है?

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

अमेरिकी अर्थशास्त्री जेफरी सैक्स के अनुसार वाशिंगटन का वैश्विक प्रभुत्व खत्म हो चुका है और हम एक बहुध्रुवीय दुनियाँ में प्रवेश कर चुके हैं, जिसमें भारत, रूस और चीन जैसे देश नई विश्व व्यवस्था के महत्वपूर्ण स्तंभ बन सकते हैं, हालांकि चीन को अपनी विस्तारवादी नीतियों को त्यागना होगा और क्षेत्रीय स्थिरता के लिए रचनात्मक कदम उठाने होंगे या भारत को अपने हितों की रक्षा के लिए अमेरिका और यूरोप के साथ रणनीतिक गठबंधन बनाना होगा। हालांकि भारत रूस को भी नहीं छोड़ेगा। साथ ही अमेरिका और यूरोप भारत पर बहुत अधिक निर्भर हैं। चीन को रोकने के लिए अमेरिका और यूरोप को भारत की आवश्यकता होगी।

पश्चिमी दुनियाँ और चीन भारत को लेकर चिंतित क्यों हो गए हैं? – आतंकवाद के लिए चीन का खुला समर्थन और आतंकवाद से पीड़ित पाकिस्तान के दिल में हाल ही में भारत द्वारा किए गए हवाई हमलों पर पश्चिमी दुनियाँ की प्रतिक्रिया यह स्पष्ट रूप से दिखाती है कि वे भारत के विकास से नहीं, बल्कि पिछले कुछ समय से प्रदर्शित की गई आत्मनिर्भरता और शक्ति से डरते हैं। यद्यपि विश्व ने भारत की आध्यात्मिक शक्ति को स्वीकार कर लिया है और कोई अन्य विकल्प नहीं है, फिर भी पश्चिमी जगत इस बात से चिंतित है कि भारत की शक्ति स्वदेशीकरण के साथ हर क्षेत्र में कैसे प्रकट हो रही है? पश्चिमी जगत उन देशों से मोहित है, जो हर चीज के लिए उन पर निर्भर हैं, अपनी सँस्कृति का त्याग कर रहे हैं और प्राकृतिक संसाधनों को कम कीमत पर उन्हें बेच रहे हैं। पश्चिमी जगत इस बात से अवगत है कि भारत का उदय वैश्विक व्यवस्था को कैसे बदल देगा। भारत जितना अधिक विकसित होगा, दुनियाँ में उतनी ही शांति और सहयोग होगा, आतंकवाद और अन्य देशों के प्राकृतिक संसाधनों के शोषण से मुक्त होगा। भारत ने चुनौतीपूर्ण कोरोना चरण के दौरान कई देशों को निःशुल्क कोरोना वैक्सीन प्रदान करके, संघर्ष क्षेत्रों में फंसे कई देशों के नागरिकों को बचाने में सहायता करके और प्राकृतिक आपदाओं के दौरान देशों का आर्थिक और मानवीय मदद करके, बिना किसी अनुचित लाभ के निःवार्थ सहायता की अपनी नीति का प्रदर्शन किया है, जिसमें तुर्की भी शामिल है, जो आतंकवाद का समर्थन और सहानुभूति रखने वाला देश है।

'आत्मनिर्भर भारत' क्यों जरूरी है ? – 'आत्मनिर्भर भारत' की ओर भारत की यात्रा और इसे समर्थन देने वाली नीतियाँ हमारी अर्थव्यवस्था के लिए लाभदायक सिद्ध हो रही हैं। हमारी अर्थव्यवस्था अप्रत्याशित दुनियाँ और घटनाओं के झटकों को झेलने के लिए और भी मजबूत हो रही है। 'मेक इन इंडिया' अभियान का उद्देश्य भारतीय विनिर्माण उद्योग के विकास को बढ़ावा देना और साथ ही भारत में वैश्विक निगमों द्वारा विनिर्माण केंद्रों की स्थापना करना है। अगर कोई विदेशी कंपनी भारत में अपना माल बनाती है और उसे घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेचने के लिए इसका इस्तेमाल करती है, तो हम पूरी प्रक्रिया को 'मेक इन इंडिया' कह सकते हैं।

हालाँकि हर वस्तु का निर्माण नहीं किया जा सकता है और हमें दूसरे देशों से आने वाले कुछ कच्चे माल पर निर्भर रहना होगा, लेकिन तकनीकी विकास के माध्यम से जो भी बनाया जा सकता है, उसे स्वदेशी रूप से बनाया जाना चाहिए और एक ग्राहक के रूप में हर भारतीय को 'मेक इन इंडिया' उत्पाद खरीदना चाहिए। अगर उत्पाद भारत में नहीं बनाया जाता है, तो सुनिश्चित करें कि हम इसे दुश्मन देश के बजाय मित्र राष्ट्र से खरीदें। हमें चीन, पाकिस्तान, बाँग्लादेश, तुर्की, मलेशिया और अजरबैजान के उत्पादों से बचना चाहिए। आइए हम उन देशों की मदद करें, जो अच्छे और बुरे समय में हमारी मदद करते हैं। किसी दुश्मन देश से कोई भी खरीद, नक्सलवाद, आतंकवाद

तथा हमारे रक्षा बलों और नागरिकों पर हमलों को प्रत्यक्ष सहायता है, इसलिए हमें विनिर्माण और सेवा क्षेत्र में तेजी और सटीकता के साथ अपनी ताकत को और विकसित करने की जरूरत है।

उदाहरण के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका तब तक एक वैश्विक आर्थिक शक्ति था, जब तक कि संयुक्त राज्य अमेरिका में विनिर्माण नहीं किया गया था। अब संयुक्त राज्य अमेरिका एक ऐसे चक्र के मध्य में है, जहाँ यह 19 ट्रिलियन डॉलर के कर्ज में डूबा हुआ है और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प संयुक्त राज्य अमेरिका में विनिर्माण को वापस लाने की तलाश कर रहा है। अभी चीन दुनियाँ की विनिर्माण महाशक्ति है, जो वैश्विक विनिर्माण उत्पादन का लगभग 26 प्रतिशत और निर्यात किए गए निर्मित माल का 32 प्रतिशत हिस्सा है। हालाँकि यह चीनी सरकार और उद्योगों के वर्षों के खर्च और प्रयास का परिणाम है, जो चीन को उन व्यवसायों के लिए सबसे वांछनीय स्थान बनाते हैं, जो अपने माल के विनिर्माण पर निर्भर हैं, जैसे कि ऑटोमेकर जो चीन को अपने माल के निर्माण के लिए सबसे अच्छी जगह मानते हैं। भारत एक पसंदीदा विकल्प के रूप में उभर रहा है, चीन प्लस 1 मॉडल भारत विदेशी निवेश आकर्षित करने के लिए बहुआयामी रणनीति अपना रहा है, जैसे सेमीकंडक्टर विनिर्माण और महत्वपूर्ण खनिज ब्लॉकों के निष्कर्षण जैसे अग्रणी क्षेत्रों के लिए बोलियाँ आमंत्रित करना और उद्योग–विशिष्ट प्रोत्साहन और वित्तीय पैकेज प्रदान करना। भारत का विनिर्माण उद्योग अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख घटक है, जो सकल घरेलू उत्पाद और नौकरियों में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह क्षेत्र वर्तमान में देश के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 17 प्रतिशत है और 27.3 मिलियन से अधिक लोगों को रोजगार देता है। यद्यपि वैश्विक विनिर्माण में भारत का वर्तमान हिस्सा 2.87 प्रतिशत है, इसकी विकास दर तेज और आशाजनक है। कई कंपनियाँ हाल ही में विभिन्न कारणों से चीन से दूर चली गई हैं, जिनमें से सबसे महत्वपूर्ण है कि श्रम लागत बहुत अधिक हो रही है। औसत चीनी व्यक्ति 17,000 अमेरिकी डॉलर कमाता है, जो कंपनियों की नजर में बहुत अधिक है, औसत भारतीय प्रति वर्ष 8,550 अमेरिकी डॉलर कमाता है, जो औसत चीनी नागरिक के वेतन के आधे से थोड़ा अधिक है। हालांकि यह अभी भी आसियान देशों के औसत वेतन से थोड़ा अधिक है। भारत 550 मिलियन से अधिक श्रमिकों के साथ चीन के बाद दुनियाँ का दूसरा सबसे बड़ा कार्यबल होने के कारण क्षतिपूर्ति करता है। इसने हाल के वर्षों में भारत के विनिर्माण प्रक्रिया को काफी बढ़ावा दिया है। दूसरा कारण यह है कि भारत चीन के विरुद्ध एक पश्चिमी सहयोगी है, जहाँ इनमें से अधिकांश ऑटो और अन्य कंपनियाँ स्थित हैं। नतीजतन ये कंपनियाँ किसी विरोधी की सहायता करने के बजाए, कारखाने स्थापित करने और किसी सहयोगी को विकसित करने तथा अमीर बनने में सहायता करने में अधिक सहज महसूस करती हैं। यदि यह प्रवृत्ति जारी रहती है, तो यह अनुमान लगाया जाता है कि 2025 तक हम विनिर्माण उत्पादन के मामले में दुनियाँ में तीसरे सबसे शक्तिशाली विनिर्माण केंद्र के रूप में जापान से आगे निकल जाएँगे, उसी क्षेत्र में 2028 तक अमेरिका से आगे निकल जाएँगे और 2030 तक निर्मित वस्तुओं के दूसरे सबसे बड़े निर्यातक बन जाएँगे। हालाँकि हम विनिर्माण बाजार और खेल में चीन के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं, लेकिन हमें वर्तमान में विनिर्माण खेल में चीन के बजाए जापान से स्पर्धा करने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है, क्योंकि हम अभी भी एक बढ़ती हुई विनिर्माण शक्ति हैं।

विनिर्माण क्षमताओं को आगे बढ़ाने में क्या बाधाएँ हैं और उनका समाधान कैसे किया जा रहा है ? – 'मेक इन इंडिया' रणनीति को लागू करने में सबसे बड़ी बाधाओं में से एक मजबूत बुनियादी ढाँचे और रसद कौशल की आवश्यकता है। कुशल विनिर्माण संचालन के लिए पर्याप्त परिवहन नेटवर्क, भरोसेमंद बिजली आपूर्ति और अच्छी तरह से विकसित औद्योगिक पार्कों की आवश्यकता होती है। इन कठिनाइयों को हल करने के लिए सरकार ने नई सड़कों, बंदरगाहों और हवाई अड्डों के साथ–साथ औद्योगिक गलियारों के निर्माण जैसी प्रमुख बुनियादी ढाँचा विकास परियोजनाएँ शुरू की हैं। इसके अलावा निवेश को आकर्षित करने और बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए संसाधन जुटाने के लिए राष्ट्रीय निवेश और अवसंरचना कोष (NIIF) जैसी पहल शुरू की गई हैं।

'मेक इन इंडिया' रणनीति के कार्यान्वयन में एक और बाधा जटिल नियामक प्रक्रियाओं और नौकरशाही देरी की उपस्थिति है। यह निगमों को भारत में विनिर्माण सुविधाएँ स्थापित करने से रोक सकता है। इस मुद्दे को हल करने के लिए सरकार ने नियामक प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने, कागजी कार्रवाई को कम करने और अनुमोदन को

स्वचालित करने के लिए कई उपाय शुरू किए हैं। एकल–खिड़की समाशोधन प्रणाली के कार्यान्वयन ने आवश्यक लाइसेंस और परमिट प्राप्त करने की प्रक्रिया को सरल बना दिया है। इसके अलावा अधिक अनुकूल कारोबारी माहौल बनाने के लिए नियामक संगठनों की पारदर्शिता और जवाबदेही में सुधार करने के प्रयास किए गए हैं।

'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम की सफलता के लिए सक्षम कार्यबल की उपलब्धता महत्वपूर्ण है। हालांकि कुछ उद्योगों में उचित रूप से कुशल लोगों की कमी है। इस मुद्दे को हल करने के लिए सरकार ने कार्यबल की रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए कौशल विकास कार्यक्रम शुरू किए हैं। कौशल अंतर को पाटने के लिए इन कार्यक्रमों में व्यावसायिक प्रशिक्षण, प्रशिक्षुता और उद्योग–विशिष्ट कौशल विकास शामिल हैं। पाठ्यक्रम को उद्योग की आवश्यकताओं से जोड़ने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि स्नातक रोजगार के लिए तैयार हैं, उद्योग और शैक्षणिक संस्थानों के बीच सहयोग को भी बढ़ावा दिया गया है।

एक अन्य समस्या विनिर्माण क्षेत्र में अनुसंधान और विकास प्रयासों को बढ़ावा देना है। नवाचार और तकनीकी विकास भारतीय उद्योगों की वृद्धि और प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए महत्वपूर्ण है। इसे संबोधित करने के लिए सरकार ने अनुसंधान और विकास का समर्थन करने के लिए कई तरह की नीतियों और प्रोत्साहनों को लागू किया है, जिसमें अनुसंधान और विकास निवेशों के लिए कर छूट, प्रौद्योगिकी ऊष्मायन केंद्रों की स्थापना और उद्योग–अनुसंधान सहयोग को बढ़ावा देना शामिल है। इन कदमों का उद्देश्य एक अभिनव सँस्कृति विकसित करना, तकनीकी प्रगति में तेजी लाना और भारत को नवाचार–संचालित विनिर्माण में वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करना है। इन कठिनाइयों से निपटने और प्रभावी समाधानों को लागू करके 'मेक इन इंडिया' पहल विनिर्माण विकास को बढ़ावा देने और निवेश आकर्षित करने का प्रयास करती है।

जैसे–जैसे भारत औद्योगिक उत्कृष्टता की अपनी यात्रा पर आगे बढ़ रहा है, 'मेक इन इंडिया' पहल का देश के विनिर्माण भविष्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा। इस योजना का उद्देश्य एक अभिनव और कुशल सँस्कृति को प्रोत्साहित करके भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में विकसित करना है। निरंतर सुधारों और विकास के लिए निरंतर प्रतिबद्धता के साथ 'मेक इन इंडिया' आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देना जारी रखेगा और देश की दीर्घकालिक समृद्धि को सुनिश्चित करते हुए स्थायी रोजगार के अवसर प्रदान करेगा।

निष्कर्ष – घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उद्योगों, राज्यों और नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के हितधारकों को अपने प्रयासों को केंद्र सरकार की नीतियों और कार्यों के साथ जोड़ना चाहिए। इससे अनुसंधान–उन्मुख, अभिनव, गुणात्मक, मात्रात्मक और कुशल विनिर्माण क्षमताओं के साथ–साथ आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और लॉजिस्टिक बुनियादी ढ़ांचे का तेजी से विकास हो सकेगा। भारत जितनी तेजी से आगे बढ़ेगा, दुनियाँ के लिए उतना ही बेहतर होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति को पूरे भारत में गुणात्मक और त्वरित रूप से लागू किया जाना चाहिए, ताकि शोध और नवोन्मेषी मानसिकता वाले युवा तैयार किए जा सकें, जो विनिर्माण क्षेत्र के लिए विश्वव्यापी शक्ति के रूप में उभरने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

pankajjayswal1977@gmail.com

धर्मांतरण देश को अंदर से खोखला कर रहा : आलोक कुमार

– युवा को अपने धर्म व कर्म को जानने की जरूरत

– ऑपरेशन सिंदूर को बताया साहसिक कदम

मुरादाबाद। विहिप के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान एड. आलोक कुमार जी ने कहा कि धर्मांतरण देश को खोखला कर रहा है। युवा पीढ़ी सनातन को जाने। उन्होंने युवाओं को धर्म और कर्म की सीख वर्ग में मिलने की बात कहते हुए 'ऑपरेशन सिंदूर' को साहसिक कदम बताया।

10 जून से 20 जून तक नियमित चलने वाले परिषद वर्ग प्रशिक्षण में कार्यकर्ता का निर्माण होगा। परिषद वर्ग के प्रारंभिक सत्र में अधिकारियों ने यह बात कही। मंगूपुर, मुरादाबाद स्थित कृष्णा बाल विद्या मंदिर विद्यालय में मंगलवार से विश्व हिंदू परिषद मेरठ क्षेत्र का परिषद वर्ग प्रारंभ हुआ। वर्ग में मेरठ, ब्रज और उत्तराखंड प्रांत से आए कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

डॉ. वरुण कुमार

वनवासी समाज के धर्मांतरण का कुचक्र

भारत के वनवासी क्षेत्रों में रहने वाले सनातनी वनवासी समाज का धर्मांतरण एक जटिल और गंभीर मुद्दा है, जो देश की साँस्कृतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय एकता के लिए चुनौती बन चुका है। यह समस्या केवल धार्मिक परिवर्तन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे ऐतिहासिक, आर्थिक, सामाजिक और विदेशी प्रभावों का एक बड़ा मकड़ जाल है। भारत के वनवासी समाज जिन्हें आमतौर पर आदिवासी या जनजातीय समुदाय कहा जाता है, देश की साँस्कृतिक धरोहर का एक अभिन्न हिस्सा हैं। ये समुदाय अपनी प्राचीन परंपराओं, प्रकृति पूजा और स्थानीय रीति–रिवाजों के साथ जीवन जीते हैं। उनकी धार्मिक मान्यताएँ सनातन धर्म से गहरे जुड़ी हैं, भले ही उनकी पूजा के तरीके और देवी–देवता स्थानीय हों। उदाहरण के लिए झारखंड के मुंडा समुदाय में सिंगबोंगा की पूजा होती है, जो सूर्य देवता का प्रतीक है और हिंदू धर्म की सूर्य पूजा से मिलता–जुलता है। ओडिशा के कोंध समुदाय धरणी पेन्नू (पृथ्वी माता) को पूजते हैं, जो सनातन धर्म की भूदेवी से समानता रखती है। छत्तीसगढ़ के गोंड समुदाय में बुड्ढा देव की पूजा प्रचलित है, जो प्रकृति और आत्माओं से संबंधित है। ये परंपराएँ दर्शाती हैं कि वनवासी समाज का धर्म सनातन धर्म का एक हिस्सा रहा है, जो प्रकृति और मानवता के साथ उनके गहरे रिश्ते को दर्शाता है। लेकिन पिछले कुछ दशकों में विशेष रूप से औपनिवेशिक काल से इन समुदायों को उनके मूल धर्म से विमुख करने की कोशिशें तेज हुई हैं। यह प्रक्रिया मुख्य रूप से ईसाई मिशनरियों और कुछ इस्लामी संगठनों द्वारा संचालित है, जो प्रलोभन, दबाव और झूठे वादों के जरिए आदिवासियों को धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित करते हैं।

धर्मांतरण का यह सिलसिला 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दौरान शुरू हुआ। ब्रिटिश शासन ने मिशनरियों को भारत में काम करने की खुली छूट दी, क्योंकि यह उनकी 'सभ्यता मिशन' का हिस्सा था। मिशनरियों ने वनवासी क्षेत्रों को अपना मुख्य लक्ष्य बनाया, क्योंकि ये समुदाय आर्थिक रूप से कमजोर, अशिक्षित और सामाजिक रूप से हाशिए पर थे। उन्होंने स्कूल, अस्पताल और चर्च खोले, जिनके माध्यम से आदिवासियों तक पहुँच बनाई। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के नाम पर लोगों को आकर्षित किया गया और धीरे–धीरे उन्हें ईसाई धर्म की ओर ले जाया गया। उदाहरण के लिए झारखंड के संथाल परगना क्षेत्र में 19वीं शताब्दी के अंत तक मिशनरी गतिविधियों के कारण ईसाई आबादी में तेजी से वृद्धि हुई। स्वतंत्रता के बाद भी यह प्रक्रिया रुकी नहीं। 20वीं शताब्दी के मध्य से विशेष रूप से पूर्वोत्तर भारत, झारखंड, छत्तीसगढ़ और ओडिशा जैसे राज्यों में मिशनरी गतिविधियाँ और तेज हुईं। सेंट्रल इंडिया ट्राइबल बेल्ट, जहाँ आदिवासी आबादी का बड़ा हिस्सा रहता है, मिशनरियों के लिए सबसे उपजाऊ क्षेत्र बन गया। यहाँ मुफ्त शिक्षा, चिकित्सा सुविधाएँ और आर्थिक सहायता जैसे प्रलोभनों का इस्तेमाल किया गया। परिणामस्वरूप कई आदिवासी परिवारों ने अपने पारंपरिक विश्वासों को छोड़कर ईसाई धर्म अपनाया। कुछ क्षेत्रों में इस्लाम की ओर भी धर्मांतरण हुआ, हालाँकि यह ईसाई मिशनरियों की तुलना में कम व्यापक रहा।

आँकड़े इस समस्या की गंभीरता को और स्पष्ट करते हैं। 2001 की जनगणना के अनुसार झारखंड में ईसाई आबादी 4.1 प्रतिशत थी, जो 2011 में बढ़कर 4.3 प्रतिशत हो गई। लेकिन स्थानीय स्तर पर जैसे सिमडेगा जिले में यह आँकड़ा 51 प्रतिशत से अधिक है। ओडिशा के कंधमाल जिले में 2001 में 18.2 प्रतिशत लोग ईसाई थे, जो 2011 में 20.5 प्रतिशत हो गए। छत्तीसगढ़ में, बस्तर जैसे क्षेत्रों में ईसाई आबादी में वृद्धि देखी गई, जो 2011 में पूरे राज्य में

1.9 प्रतिशत थी, लेकिन स्थानीय स्तर पर यह अधिक हो सकती है। पूर्वोत्तर भारत में यह समस्या और भी गंभीर है। नागालैंड में 90 प्रतिशत, मिजोरम में 87 प्रतिशत और मेघालय में 75 प्रतिशत लोग ईसाई हैं। ये आँकड़े सतही तौर पर जनगणना पर आधारित हैं, लेकिन स्थानीय लोग और संगठन दावा करते हैं कि वास्तविक सँख्या इससे कहीं अधिक है, क्योंकि कई लोग धर्मांतरण के बाद भी जनगणना में अपना पुराना धर्म ही दर्ज कराते हैं। यह एक छिपा हुआ संकट है, जो आँकड़ों से पूरी तरह सामने नहीं आता।

धर्मांतरण कराने वाले संगठन इस काम को बहुत सुनियोजित तरीके से करते हैं। उनकी कार्यप्रणाली में कई स्तर शामिल हैं, जो प्रलोभन, दबाव और प्रचार पर आधारित हैं। सबसे आम तरीका है आर्थिक और सामाजिक प्रलोभन देना। गरीब आदिवासी परिवारों को पैसा, खाना, कपड़े या नौकरी का लालच दिया जाता है। मुफ्त स्कूल और अस्पताल खोलकर बच्चों और बीमार लोगों को निशाना बनाया जाता है। ओडिशा के कंधमाल में मिशनरी स्कूलों में बच्चों को ईसाई प्रार्थनाएँ और बाइबिल पढ़ाई जाती है। कई बार इन स्कूलों में दाखिला लेने की शर्त ही धर्मांतरण होती है। इसके अलावा सामाजिक दबाव भी एक बड़ा हथियार है। कुछ गाँवों में जो लोग धर्म नहीं बदलते, उन्हें सामाजिक बहिष्कार का सामना करना पड़ता है। कथित रूप से छत्तीसगढ़ के कुछ गाँवों में केवल धर्मांतरित लोग ही गाँव के कुएँ से पानी ले सकते हैं, या सामुदायिक संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं। शादी–ब्याह के जरिए भी दबाव बनाया जाता है, जहाँ धर्मांतरित परिवार आपस में ही रिश्ते बनाते हैं, जिससे गैर–धर्मांतरित लोग अलग–थलग पड़ जाते हैं। धार्मिक प्रचार भी इस कुचक्र का हिस्सा है। चर्चों में प्रार्थना सभाएँ आयोजित की जाती हैं, जहाँ चमत्कार और बीमारी ठीक करने की बातें बताई जाती हैं। आदिवासी भाषाओं में बाइबिल छापकर बाँटी जाती है, ताकि लोग इसे आसानी से समझ सकें।

इस प्रक्रिया में दुष्टता भी शामिल है, जो इस कुचक्र को और खतरनाक बनाती है। मिशनरी संगठन अक्सर आदिवासी देवी–देवताओं को 'शैतान' या 'पापी' कहकर उनकी आस्था का अपमान करते हैं। उनकी परंपराओं को पिछड़ा और जंगली बताया जाता है, जिससे उनकी साँस्कृतिक पहचान कमजोर होती है। झूठे वादे भी आम हैं। आंध्रप्रदेश के कुछ क्षेत्रों में लोगों को जमीन या नौकरी का लालच दिया गया, लेकिन बाद में उन्हें कुछ नहीं मिला। कुछ मामलों में मिशनरियों ने आदिवासियों को उनके ही गाँव में अल्पसँख्यक बना दिया, जिससे सामाजिक तनाव बढ़ा। कंधमाल में 2008 में धर्मांतरण का विरोध करने के कारण स्वामी लक्ष्मणानन्द सरस्वती जी की हत्या कर दी गई और इस कारण हिंदू और ईसाई समुदायों के बीच हिंसक टकराव हुआ। लक्ष्मणानंद सरस्वती जी ने आजीवन आदिवासियों के सामाजिक – आर्थिक विकास के लिए काम किया और धर्मांतरण के विरूद्ध लगातार संघर्ष किया, जिस कारण उनकी जघन्य हत्या कर दी गई। इस तरह की दुष्टता ने न केवल आदिवासियों की धार्मिक आस्था बल्कि उनके सामाजिक ताने–बाने को भी तोड़ने का कार्य किया है।

धर्मांतरण के इस कुचक्र के पीछे सबसे बड़ा समर्थन है विदेशी फंडिंग का! मिशनरी संगठनों को अमेरिका, यूरोप और कुछ खाड़ी देशों से भारी मात्रा में पैसा मिलता है। एक आँकड़े के अनुसार 2019–20 में भारत में मिशनरी संगठनों को 2,000 करोड़ रुपये से ज्यादा की विदेशी सहायता मिली। 'वर्ल्ड विजन' और 'कैरिटास इंडिया' जैसे संगठन इसके बड़े उदाहरण हैं। यह पैसा शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक कार्यों के नाम पर लिया जाता है, लेकिन इसका बड़ा हिस्सा धर्मांतरण के लिए इस्तेमाल होता है। उदाहरण के लिए मेघालय में एक मिशनरी संगठन ने स्कूल खोलने के नाम पर विदेशी फंड लिया, लेकिन बाद में वह स्कूल ईसाई प्रचार का केंद्र बन गया। विदेशी फंडिंग न केवल मिशनरियों को आर्थिक ताकत देती है, बल्कि उनके नेटवर्क को भी मजबूत करती है। यह पैसा स्थानीय कार्यकर्ताओं को भर्ती करने, प्रचार सामग्री छापने और बड़े पैमाने पर सभाएँ आयोजित करने में भी खर्च होता है। सरकारों ने इस पर नजर रखने की कोशिश जरूर की है, लेकिन पूरी तरह रोकना मुश्किल ही रहा है।

धर्मांतरण के भारत पर दूरगामी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहे हैं। सबसे बड़ा नुकसान है साँस्कृतिक विनाश। आदिवासी समाज की परंपराएँ, त्योहार और कला खत्म हो रही हैं। नागालैंड में अंगामी नगाओं के 'सेक्रेनी' जैसे त्योहार अब कम ही मनाए जाते हैं, क्योंकि वहाँ की अधिकांश आबादी ईसाई बन चुकी है। उनकी भाषाएँ, नृत्य और शिल्प भी गायब हो रहे हैं। सामाजिक स्तर पर, धर्मांतरण ने समुदायों में टकराव पैदा किया है। परिवार भी टूट रहे हैं क्योंकि कुछ सदस्य धर्म बदल लेते हैं और बाकी नहीं। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भी यह खतरा है। पूर्वोत्तर भारत में धर्मांतरण के साथ–साथ अलगाववादी आंदोलन बढ़े हैं। नागालैंड में नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नगालिम (NSCN) जैसे संगठन इसका उदाहरण हैं, जो विदेशी समर्थन से मजबूत हुए। विदेशी प्रभाव से देश की एकता और अखंडता को खतरा है। आर्थिक रूप से भी नुकसान हो रहा है। धर्मांतरित लोग अक्सर मिशनरियों पर निर्भर हो जाते हैं, जिससे उनकी स्वतंत्रता छिनती है। यह एक तरह का नया गुलामी का रूप है, जहाँ आदिवासी अपनी जड़ों से कटकर विदेशी संगठनों के अधीन हो जाते हैं।

इस समस्या को रोकने के लिए भारत सरकार और सामाजिक संगठनों ने कई कदम उठाए हैं। सरकार ने सबसे पहले धर्मांतरण विरोधी कानून बनाए। ओडिशा में 1967 में पहला ऐसा कानून बना जो बल, धोखे या प्रलोभन से होने वाले धर्मांतरण को रोकता है। मध्य प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़, झारखंड, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों ने भी ऐसे कानून लागू किए। उत्तर प्रदेश का 2021 का 'उत्तर प्रदेश विधि विरुद्ध धर्म परिवर्तन प्रतिषेध अधिनियम' इसका ताजा उदाहरण है, जो विवाह के लिए धर्मांतरण को भी प्रतिबंधित करता है। इन कानूनों में उल्लंघन के लिए 3 से 10 साल की जेल और जुर्माने का प्रावधान है। लेकिन इन

कानूनों का प्रभावी रूप से लागू होना एक चुनौती है, क्योंकि ग्रामीण और दुर्गम क्षेत्रों में निगरानी मुश्किल है। सरकार ने आदिवासी कल्याण के लिए कई योजनाएँ भी शुरू की हैं। 'वनबंधु कल्याण योजना' के अंतर्गत शिक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका के अवसर बढ़ाए जा रहे हैं। 'एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय' आदिवासी बच्चों को मुफ्त और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दे रहे हैं, ताकि वे मिशनरी स्कूलों पर निर्भर न रहें। 'प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान' (PM&JANMAN) 2023 में शुरू हुआ, जो कमजोर जनजातीय समूहों के विकास पर केंद्रित है। सरकार ने विदेशी फंडिंग पर भी नकेल कसी है। 2020 में कई NGOs का लाइसेंस रद्द किया गया, जो अवैध रूप से पैसा इस्तेमाल कर रहे थे।

सामाजिक स्तर पर हिंदू धार्मिक संगठनों ने इस कुचक्र को तोड़ने में बड़ी भूमिका निभाई है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिंदू परिषद (विहिप) और वनवासी कल्याण आश्रम जैसे संगठन सक्रिय हैं। वनवासी कल्याण आश्रम, जो 1952 में शुरू हुआ, आदिवासी क्षेत्रों में स्कूल, छात्रावास और स्वास्थ्य केंद्र चला रहा है। इसके 'घर वापसी' अभियान ने कई धर्मांतरित लोगों को वापस सनातन धर्म में लाया है। 2014 में झारखंड में 200 से अधिक परिवारों की घर वापसी कराई गई। विहिप ने 'धर्म जागरण' कार्यक्रम चलाए, जिनमें आदिवासियों को उनकी साँस्कृतिक जड़ों से जोड़ा जाता है। 2015 में कंधमाल में विहिप ने बड़े पैमाने पर जागरूकता अभियान चलाया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने आदिवासियों को हिंदू समाज का अभिन्न हिस्सा बताते हुए उनके बीच शाखाएँ और प्रशिक्षण शिविर शुरू किए। पूर्वोत्तर भारत में इसके कई सेवा प्रकल्प हैं, जो शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ दे रहे हैं। इन संगठनों ने न केवल धर्मांतरण की गति को धीमा किया, बल्कि आदिवासियों में अपनी सँस्कृति के प्रति गर्व भी जगाया। लेकिन इनके काम को कुछ लोग साम्प्रदायिक भी कहते हैं, जिसके कारण विवाद भी होता है।

वर्तमान में सरकार और समाज मिलकर कई नए प्रयास कर रहे हैं। शिक्षा और जागरूकता पर जोर दिया जा रहा है। स्कूलों में आदिवासी सँस्कृति को पढ़ाया जा रहा है, ताकि नई पीढ़ी अपनी जड़ों से जुड़ी रहे। कानूनी सुधारों के तहत कुछ राज्य अपने धर्मांतरण विरोधी कानूनों को और सख्त कर रहे हैं। केंद्र सरकार राष्ट्रीय स्तर पर एक समान कानून लाने पर विचार कर रही है। साँस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए आदिवासी त्योहारों जैसे 'सरहुल' और 'करमा' को बढ़ावा दिया जा रहा है। राँची और भुवनेश्वर में आदिवासी संग्रहालय बनाए गए हैं, जो उनकी कला और परंपराओं को संरक्षित कर रहे हैं। आदिवासी समुदाय का आर्थिक सशक्तिकरण भी एक बड़ा कदम है। 'मुद्रा योजना' और 'स्टैंड अप इंडिया' जैसी योजनाएँ आदिवासियों को स्वरोजगार के अवसर दे रही हैं। 'प्रधानमंत्री जन धन योजना' ने वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दिया है, जिससे लोग मिशनरियों के प्रलोभन में कम फँसते हैं।

इस कुचक्र को पूरी तरह रोकने के लिए भविष्य में और समन्वित प्रयासों की जरूरत है। सबसे पहले शिक्षा का स्तर सुधारना होगा। सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता बढ़ाई जाए, ताकि आदिवासी बच्चे मिशनरी स्कूलों पर निर्भर न रहें। कानूनों का सख्ती से पालन जरूरी है और इसके लिए स्थानीय प्रशासन को और सक्रिय करना होगा। विदेशी फंडिंग पर पूरी तरह रोक लगानी होगी और इसके लिए एक मजबूत निगरानी तंत्र बनाना होगा। समाज को भी अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। आदिवासियों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए सामाजिक एकीकरण जरूरी है, ताकि वे हाशिए पर न रहें। उनकी सँस्कृति को बढ़ावा देने के लिए और मेलों, प्रदर्शनियों और साँस्कृतिक केंद्रों की स्थापना होनी चाहिए। त्रिपुरा और छत्तीसगढ़ के कुछ क्षेत्रों में इन प्रयासों से सफलता मिली है। त्रिपुरा में हिंदू संगठनों ने धर्मांतरण को काफी हद तक कम किया है। बस्तर में वनवासी कल्याण आश्रम के काम से आदिवासियों में जागरूकता बहुत बढ़ी है।

इस समस्या का समाधान तभी संभव है, जब सरकार, समाज और स्वयं आदिवासी समुदाय मिलकर काम करें। यह कुचक्र केवल धार्मिक परिवर्तन तक सीमित नहीं है, यह एक साँस्कृतिक और राष्ट्रीय संकट है। आदिवासियों की पहचान, उनकी परंपराएँ और उनकी स्वतंत्रता बचाना जरूरी है। यह तभी हो सकता है, जब हम उनकी आर्थिक, सामाजिक और साँस्कृतिक जरूरतों को समझें और उन्हें मजबूत करें। सनातनी वनवासी समाज भारत की आत्मा का हिस्सा है, और उनकी रक्षा करना हम सबकी जिम्मेदारी है। इस दिशा में सकारात्मक और समावेशी कदम उठाकर हम इस कुचक्र को तोड़ सकते हैं और एक मजबूत, एकजुट भारत का निर्माण कर सकते हैं।

लेखक पूर्व संकायाध्यक्ष, सूक्ष्म जीवविज्ञानी, निसर्गोपचारक एवं वर्तमान में एक एडटेक कंपनी में कार्यरत, भारतीय मनीषा एवं समसामयिक विश्लेषण में विशेष रुचि रखते हैं

murari.shukla@gmail.com

अम्लपित्त कारण और निवारण

अम्लपित्त रोग वह विकार है, जिसमें मन्दाग्नि के कारण खाया हुआ अन्न या भोजन उचित रूप से पच नहीं पाता है। इस कारण विदग्ध अन्न शुक्तता को प्राप्त हो जाता है। परिणामस्वरूप अन्न रस विदग्ध पित्त की उपस्थिति के कारण अम्लयुक्त हो जाता है। इस कारण खाया हुआ आहार विदग्ध होकर उसी प्रकार अम्ल (खट्टा) हो जाता है, जिस प्रकार अच्छी तरह से बिना सूखे हुए दही के बर्तन में यदि दूध डाल दिया जाए, तो वह फट कर तुरन्त खट्टा हो जाता है। आधुनिक विज्ञान अम्लपित्त को ही "हाइपर एसिडिटी" बोलता है।

कारण – मात्रा एवं संयोग विरुद्ध भोजन करने से, पुनः भोजन कर लेने से, मैदा एवं उड़द की पित्र्ठी आदि से बने द्रव्य के सेवन करने से, अपक्व मद्य और गोरस (छाछ आदि) के खाने से, गरिष्ठ भोजन करने से, मल–मूत्र आदि के वेगों को रोकने से, अत्यधिक उष्ण–स्निग्ध–रूक्ष, अम्ल और द्रव पदार्थों के अधिक सेवन से, गुड़, राब, चीनी आदि कुलत्थी, भूना हुआ धान्य के अधिक प्रयोग से तथा चिउड़ा, पोहा आदि के अधिक सेवन करने से, भोजन के बाद तुरन्त दिन में सोने से अत्यधिक स्नान और अवगाहन करने से, भोजन के मध्य में अधिक पानी पीने से, बासी भोजन से, वातादि रोग (विशेषकर पित्त) प्रकुपित होकर मन्दाग्नि उत्पन्न कर देता है, जिसके परिणामस्वरूप खाया हुआ भोजन समुचित रूप से नहीं पचता है। इस कारण अम्लपित्त या हाइपर एसिडिटी होती है।

रोग का लक्षण – भोजन का भलीभांति पाचन न होना, बिना किसी प्रकार के शारीरिक परिश्रम किए हुए थकावट का अनुभव करना, मिचली आना, कड़वी या खट्टी डकार आना, शरीर में भारीपन की अनुभूति, हृदय प्रदेश एवं गले में जलन तथा अरुचि आदि लक्षण रोगी में मिलते हैं। इसी के आधार पर अम्लपित्त का रोगी कहा जा सकता है–अर्थात् वह व्यक्ति अम्लपित्त रोग (Deases of hyperacidity) से ग्रस्त हो गया।

वमन या विरेचन क्या करना चाहिए – अम्लपित्त रोगी को सर्वप्रथम वमन (उल्टी) कराना चाहिए। इस क्रिया से खट्टा, तीखा, कड़वा एवं दूषित पित्त बाहर निकल जाता है। इससे रोगी को इस प्रकार शान्ति मिलती है, जैसे आग या गर्मी से झुलस रहे व्यक्ति को शीतल छाया में। वमन कराने के बाद विरेचन कराना चाहिए। इससे शरीर में अवशिष्ट पित्त, आम आदि दूषित और संचित तत्व बाहर निकल जाते हैं। इस क्रिया के बाद रोगी को स्नेहन देकर अनुवासन वस्ति देनी चाहिए। पुराने अम्लपित्त रोगियों में जो दोष अधिक हो अथवा अनुबन्ध हो तो उसका ज्ञान करके आस्थापन (निरूह) वस्तियाँ देनी चाहिए। कई बार रोगियों में बढ़े हुए दोषों को देखते हुए प्रत्येक सप्ताह वमन और विरेचन कराना पड़ता है। इस प्रकार शरीर के दोषों का निर्हरण हो जाने के बाद प्रमुख दोषों का विचार करके औषधि एवं आहार की व्यवस्था करनी चाहिए।

आहार और जीवन शैली – अम्लपित्त के रोगी को तीखे, खट्टे–चटपटे, रूखे, दाहकारक आहार का परित्याग करना चाहिए और बिना भोजन पचे हुए, भोजन पुनः दुबारा नहीं लेना चाहिए, चाहे वह भोजन कितना ही स्वादिष्ट या अमृततुल्य ही क्यों न हो। तली–भुनी चीजें, मादक पदार्थ, मिर्च मसालों को छोडना अति आवश्यक होता है। रात में दही नहीं खाना चाहिए। शांत वातावरण में भोजन लें।

(भारतीय धरोहर से साभार)

घरेलू उपचार

- भुना हुआ जीरा और धनिया के बीज (25 ग्राम प्रत्येक) का पाउडर लें और 50 ग्राम चीनी के साथ मिलाएँ।
- सौंफ और मिसरी का सेवन करना चाहिए।
- आंवला का मुरब्बा खाएँ।
- मीठे पान का सेवन भोजन के पश्चात् लाभकारी है।
- गुलकन्द का सेवन एसिडिटी को कम कर आराम देता है।

आचार्य सुशील कुमार जी महाराज जन्म शताब्दी महोत्सव पर्यावरण वर्ष के रूप में समर्पित

डा. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित आचार्य सुशील जी महाराज की जन्म शताब्दी महोत्सव का भव्य एवं प्रेरणादायक आयोजन, देश की प्रतिष्ठित आध्यात्मिक, सामाजिक और राजनीतिक विभूतियों की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर भारत के 14वें राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद जी, परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले जी, विश्व हिंदू परिषद के अध्यक्ष श्री आलोक कुमार जी, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के चेयरमैन श्री किशोर मकवाना जी, विश्व अहिंसा संघ ट्रस्ट के चेयरमैन श्री गौतम ओसवाल जी, वाइस चेयरमैन श्री कमल ओसवाल जी समेत अनेक सम्माननीय अतिथियों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

धर्मप्रचार को समर्पित साध्वी दीप्ति ने सभी अतिथियों को पौधा भेंट कर स्वागत किया और आचार्य सुशील जी के जीवन दर्शन को श्रद्धांजलि स्वरूप प्रस्तुत किया। स्वामी चिदानंद सरस्वती जी ने कहा कि मरण उनका होता है जो केवल अपने लिए जीते हैं, स्मरण उनका होता है जो समाज के लिए जीते हैं। आचार्य सुशील आज भी अपने कार्यों के माध्यम से जीवित हैं। विहिप के अध्यक्ष आलोक कुमार जी ने कहा कि करुणा के बिना हिंसा नहीं रूकेगी और शांति संभव नहीं होगी यदि हम दूसरों के दुःख से पीड़ित न हों। सभी प्रतिभागियों को पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलाई गई। पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद जी तथा राश्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले ने कल्पवृक्ष को जल अर्पित कर इस महोत्सव का शुभारंभ किया।

संस्कारित, चरित्रवान, प्रशिक्षित कार्यकर्ता समाज में साधक की तरह कार्य करे : शंकर जी गायकर

जोधपुर, 17 जून। विश्व हिन्दू परिषद विगत 60 वर्षों से विश्व भर के हिन्दू समाज में सेवा, समरसता, सुरक्षा और संस्कार भाव का जागरण कर रहा है। समय–समय पर विभिन्न जनजागरण के कार्यक्रम, आंदोलन संगठन द्वारा हुए हैं। विहिप आज हिन्दू का विश्वास है, जहाँ जैसी परिस्थिति में आवश्यकता है कार्यकर्ता सदैव तत्परता से सनातन सँस्कृति के उत्थान में सतत संलग्न है। उक्त विचार विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय सह मंत्री शंकर जी गायकर ने जूनी धाम खेतलाजी मन्दिर प्रांगण में दस दिवसीय प्रांत परिषद वर्ग के समापन सत्र को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। गायकर ने कहा कि विहिप हिन्दू समाज का विश्वास बन चुका है। आज आवश्यकता है कि संस्कारित, चरित्रवान, प्रशिक्षित कार्यकर्ता समाज में सेवा, समरसता, सुरक्षा, संस्कार जागरण, तीर्थस्थलों की सुरक्षा व श्रद्धा केंद्रों के संरक्षण जैसे विविध क्षेत्रों में कार्य करें।

उन्होंने कहा कि संकल्प से तय किये राम मंदिर आंदोलन में संगठन की भूमिका को सबने देखा है। उन्होंने कहा कि यह वर्ग समाप्त नहीं, बल्कि संगठनात्मक जीवन का शुभारंभ है। समाज की अपेक्षाएँ आपसे जुड़ी हैं। अब आपको साधक की तरह समाज में कार्य करना है, अपनी साधना का फल समाज व संगठन को समर्पित करने का समय है।

समारोह का शुभारंभ संत बालकदास महाराज ढालोप एवं अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ, प्रांत संगठन मंत्री राजेश पटेल ने वर्ग की गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए सभी सहयोगियों का आभार प्रकट किया। उल्लेखनीय सहभागिता – जोधपुर प्रांत के 25 जिलों से आए 72 कार्यकर्ताओं ने 10 दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग में शारीरिक, मानसिक व वैचारिक रूप से विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया। वर्ग संचालन हेतु 25 से अधिक शिक्षकों, प्रबंधकों व पदाधिकारियों ने सेवाएं दीं।

हिंदू अस्मिता की पुकार : मंदिर स्वराज एवं हिन्दू जनसँख्या असंतुलन पर राष्ट्रव्यापी अभियान : मा. मिलिंद परांडे जी

झांसी, 12 जून 2025। विश्व हिन्दू परिषद् के केन्द्रीय संगठन महामंत्री मिलिंद परांडे जी ने आज सर्किट हाउस में पत्रकार बंधुओं को संबोधित करते हुए कहा कि भारतवर्ष में हिंदू मंदिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त कराने के उद्देश्य से विश्व हिंदू परिषद् ने देशव्यापी जनजागरण अभियान आरंभ किया है। इस ऐतिहासिक अभियान की शुरुआत आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा नगर में एक विशाल सभा एवं संत–समागम के माध्यम से हुई, जिसमें देशभर के संत–महात्मा, धर्माचार्य, मंदिर ट्रस्टी, वैदिक विद्वान तथा सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

मंदिर केवल पूजा स्थल नहीं, अपितु हिंदू समाज की आध्यात्मिक, सँास्कृतिक और आर्थिक चेतना के केंद्र हैं। मंदिरों पर सरकारी नियंत्रण धार्मिक स्वतंत्रता, न्याय और समानता के सिद्धांतों के विरुद्ध है। उन्होंने कहा कि जब चर्च, मस्जिद पर राज्य का नियंत्रण नहीं है, तो केवल हिंदू मंदिरों के साथ भेदभाव क्यों ? यह अभियान केवल एक संगठन का नहीं, अपितु सम्पूर्ण हिंदू समाज की चेतना का प्रतीक है। विश्व हिंदू परिषद् भारतभर के धर्मप्रेमी नागरिकों से आह्वान करती है कि वे इस अभियान से जुड़ें और अपने मंदिरों को पुनः स्वाधीन करने की दिशा में सक्रिय भूमिका निभाएँ।

हिन्दू जनसँख्या में असंतुलन का हो रहा निर्माण

उन्होंने कहा कि भारत की हिन्दू जनसँख्या की संरचना में हो रहा धार्मिक असंतुलन अब राष्ट्र की सँास्कृतिक, सामाजिक और सुरक्षा व्यवस्था के लिए एक गहरी चिंता का विषय बन गया है। इस असंतुलन के पीछे कई योजनाबद्ध कारण कार्य कर रहे हैं, जिनमें विशेष रूप से धार्मिक मतांतरण, लव जिहाद, बाँग्लादेश और म्यांमार से हो रही मुस्लिम घुसपैठ, और हिंदू समाज में घटती जन्मदर शामिल है। हिन्दू जनसँख्या असंतुलन के प्रमुख कारण बताते हुए उन्होंने कहा कि सुनियोजित रूप से आर्थिक प्रलोभन, छल कपट या दबाव के माध्यम से मिशनरियों द्वारा हो रहे धर्मांतरण ने कई क्षेत्रों में स्थानीय हिंदू जनसँख्या को कम किया है। एक सुनियोजित रणनीति के तहत मुस्लिमों के एक वर्ग द्वारा हिंदू युवतियों को फँसाकर उनका मतांतरण कराया जा रहा है, जो केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सँास्कृतिक हमला है। सीमावर्ती राज्यों जैसे असम, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा और अब दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान जैसे राज्यों में रोहिंग्या मुस्लिम घुसपैठियों की सँख्या चिंताजनक रूप से बढ़ रही है।

शिक्षा और आर्थिक दृष्टिकोण से जागरूक हिंदू समाज में परिवार सीमित रखने की प्रवृत्ति है, परंतु बाकी वर्गों में इस पर कोई नियंत्रण नहीं है, जिससे असंतुलन और तेज होता जा रहा है। हाल ही में संयुक्त राष्ट्र जनसँख्या कोष (UNFPA) की रिपोर्ट ने भारत में जनसँख्या वितरण की गहराई से समीक्षा प्रस्तुत की है। रिपोर्ट के अनुसार कुछ वर्गों में जन्मदर जहाँ स्थिर या बढ़ती हुई है, वहीं हिंदू समाज में यह दर घट रही है। भारत के स्थायित्व, सँस्कृति और एकता की रक्षा की आवश्यकता है कि सभी राष्ट्रप्रेमी नागरिकों, संतों, सामाजिक संगठनों और बुद्धिजीवियों से अपील है कि वे इन विषयों पर जनजागरण में सहभागी बनें।

पत्रकार वार्ता में विहिप क्षेत्र संगठन मंत्री गजेन्द्र जी, विहिप प्रान्त उपाध्यक्ष विनोद अग्रवाल जी, विहिप प्रान्त मंत्री राजू पोरवाल जी, प्रान्त प्रचार प्रसार प्रमुख ओमेन्द्र अवस्थी भी उपस्थित रहे।

kanpur.vhp@gmail.com

विहिप के कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग से सीखकर हिन्दू युवा बनाएंगे भारत को विश्व गुरु : चम्पत राय जी

उरई, 17 जून, 2025। बृज कुंवर देवी एल्ड्रिच पब्लिक स्कूल उरई में चल रहे विश्व हिन्दू परिषद् शिक्षा वर्ग के समापन सत्र पर संबोधित करते हुए विश्व हिन्दू परिषद् के केन्द्रीय उपाध्यक्ष मा. चम्पतराय जी ने कहा कि भारतवर्ष, जिसकी धरती पर वेदों की ऋचाएँ गूँजीं, जहाँ प्रभु श्रीराम ने धर्म की स्थापना की, भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का ज्ञान दिया और बुद्ध, महावीर व गुरुनानक जैसे महापुरुषों ने मानवता का मार्ग प्रशस्त किया – वह भारत आज पुनः से विश्व को दिशा देने की स्थिति में है, परन्तु इस सँस्कृतिक पुनर्जागरण के समय हमारे समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी हैं – जैसे मतांतरण, लव जिहाद, जनसँख्या असंतुलन, मंदिरों पर सरकारी नियंत्रण और डिजिटल माध्यमों से सनातन सँस्कृति पर हो रहे सुनियोजित आघात। इन समस्त परिस्थितियों में विश्व हिन्दू परिषद् समाज को जागरूक कर रही है, युवाओं को प्रशिक्षित कर रही है। विहिप के कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग आज के हिन्दू युवा को केवल इतिहास का बोध ही नहीं कराते, बल्कि उसे शारीरिक रूप से दक्ष, बौद्धिक रूप से तेजस्वी और आत्मिक रूप से जाग्रत बनाते हैं। इन वर्गों में उसे नेतृत्व, सेवा, संगठन और राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना सिखाई जाती है। वह युवा फिर न केवल अपने जीवन में परिवर्तन लाता है, बल्कि समाज में भी जागरण का दीप जलाता है। आज भारत ने वैज्ञानिक और राजनीतिक नेतृत्व दिखाया है। परन्तु भारत की पहचान केवल आर्थिक महाशक्ति बनना नहीं है, भारत को पुनः विश्व गुरु बनना है और यह तभी संभव है, जब हमारे युवा धर्मनिष्ठ, सँस्कारित और सशक्त बनें।

विश्व हिन्दू परिषद् इस लक्ष्य की सिद्धि में प्रतिबद्ध है। वह ऐसा युवा गढ़ रही है, जो आधुनिकता को आत्मसात करते हुए अपनी सनातन सँस्कृति की रक्षा और विस्तार का ध्येय लेकर आगे बढ़ता है। आइए, हम सब इस साँस्कृतिक यज्ञ के होता बनें, कार्यकर्ता बनें, समाज को जागृत करें और भारत को पुनः विश्व गुरु बनाएँ।

क्षेत्र संगठन मंत्री श्री गजेंद्र जी, वर्गाधिकारी श्री देवेंद्र मिश्रा जी, विहिप प्रान्त सह मंत्री श्री अभिनव दीक्षित जी तथा श्री अवधेश भदौरिया जी, जिला अध्यक्ष महंत गुरु प्रसाद शर्मा जी, जिला मंत्री आचार्य तेजस जी, जिला प्रचार प्रसार प्रमुख रमाकांत सोनी जी, प्रांत सेवा प्रमुख सदस्य बलवीर सिंह जादौन, आशीष पटेल (कपासी) सह मंत्री, साकेत शांडिल्य, अभिषेक विश्वकर्मा, आशीष सेठ, राम जी सोनी, शिशिर प्रताप सिंह, रामकुमार चतुर्वेदी, सचिन सोनी, धीरज दीक्षित, जिला संगठन मंत्री सौरभ जी, शत्रुघ्न, बजरंग दल जिला संयोजक अनिकेत चतुर्वेदी, बजरंग दल सह संयोजक गौरव सोनी उपस्थित रहे।

मेरठ क्षेत्र के धर्मरक्षककों का दक्षता वर्ग संपन्न

मेरठ प्रान्त अन्तर्गत मुरादाबाद शहर स्थित स्थानीय सरस्वती शिशु मंदिर में यह वर्ग का आयोजन हुआ था। 8 जून को अपराह्न चार बजे वर्ग प्रारम्भ हो कर 10 जून को दोपहर में 12 बजे समाप्त हुआ, कुल 26 शिक्षार्थी तीनों प्रान्त से वर्ग में भाग लिए और 17 शिक्षार्थी नूतन धर्म रक्षक के रूप में चयन हुए और सभी को एक–एक प्रखन्ड का दायित्व दिया गया। क्षेत्र संगठन मन्त्री सोहन सिंह जी, धर्मप्रसार क्षेत्र प्रमुख श्री यशपाल जी, गुलाब सिंह जी तथा अ.भा. धर्मप्रसार प्रमुख सुधांशु मोहन पटनायक भी इस वर्ग में पूर्ण समय उपस्थित रहे।

murari.shukla@gmail.com

बुलंदशहर में संत शिरोमणि जगद्गुरु रविदास जी महाराज एवं उनकी
परम शिष्या मीराबाई जी के समागम कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप अध्यक्ष मा. आलोक कुमार जी

नई दिल्ली में आचार्य सुशील कुमार जी महाराज जन्म शताब्दी महोत्सव के अवसर पर उपस्थित भारत के 14वें पूर्व राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद जी, पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी, संघ के सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले जी, विहिप के अध्यक्ष श्री आलोक कुमार जी, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के चेयरमैन श्री किशोर मकवाना जी, विश्व अहिंसा संघ ट्रस्ट के चेयरमैन श्री गौतम ओसवाल जी तथा वाइस चेयरमैन श्री कमल ओसवाल जी

उरई (उ.प्र.) में विहिप अवध व कानपुर प्रांत के परिषद शिक्षा वर्ग में उपस्थित विहिप के उपाध्यक्ष व श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महामंत्री श्री चम्पत राय जी

मुरादाबाद में मेरठ क्षेत्र के धर्मरक्षकों के दक्षता वर्ग में उपस्थित विहिप केन्द्रीय मंत्री श्री सुधांशुमोहन जी तथा प्रांत के पदाधिकारी

विहिप–मंदिर एवं अर्चक–पुरोहित संपर्क आयाम ने 8 जून 2025 को डोंबिवली मंदिर में नि:शुल्क जन्मदिन हवन का आयोजन किया

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6

email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 28.06.2025
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

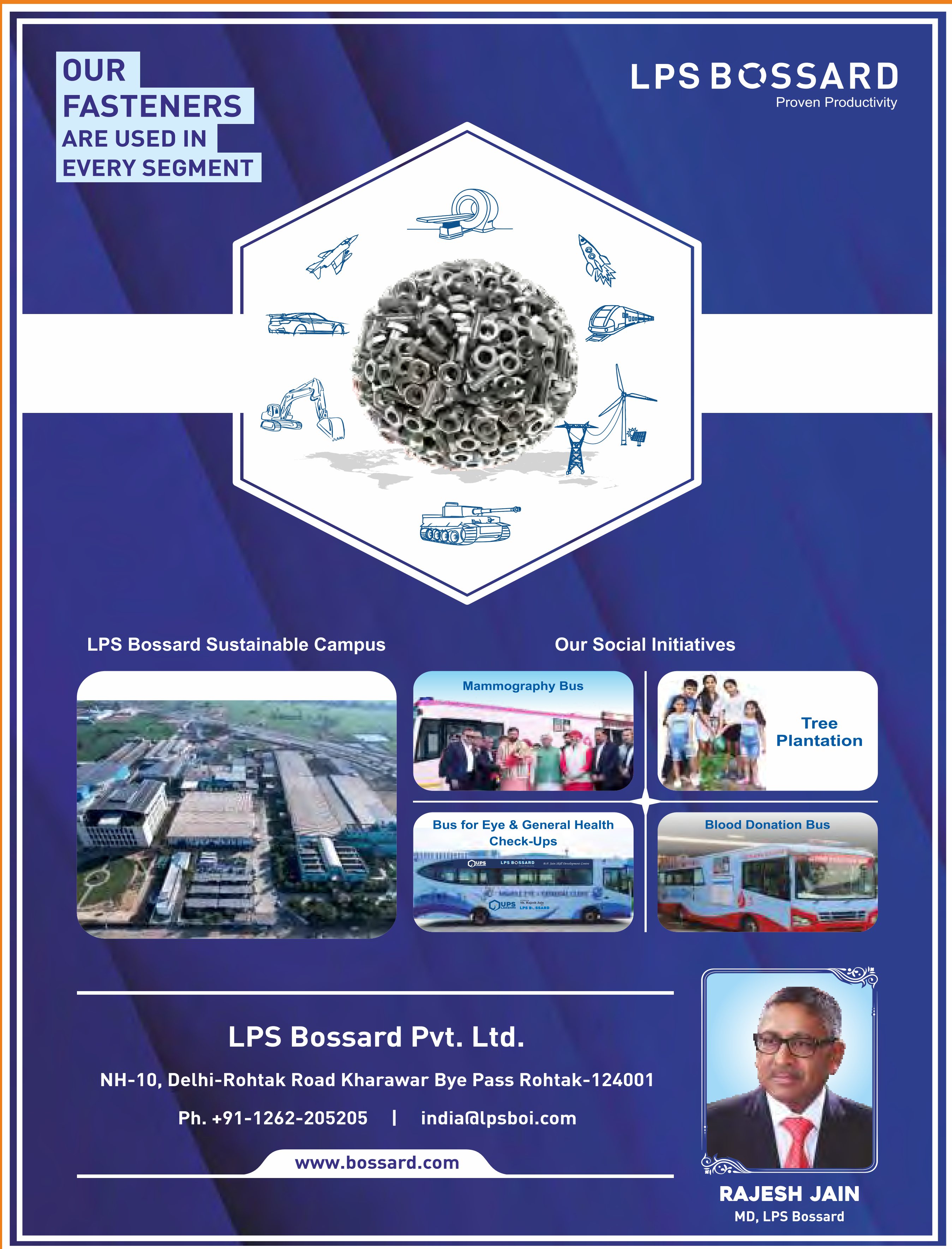

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्‌श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी